# मसीह का सुसमाचार

*लेखक*
**जे. सी. चोट**

*अनुवादक*
**सनी डेविड**

# सूचना

**मसीह की कलीसिया** दिल्ली में प्रत्येक सप्ताह के पहले दिन (रविवार के दिन) बाइबल अध्ययन और आराधना करने के लिये निम्नलिखित स्थान पर सुबह दस बजे एकत्रित होती है :

बी-350, चितरंजन पार्क
नई दिल्ली-110019

| | |
|---|---|
| बच्चों के लिये संडे स्कूल | 10.00 बजे |
| बाइबल अध्ययन | 10.00 बजे |
| आराधना | 11.00 बजे |

## *सबका स्वागत है*

सम्पर्क के लिये :
9810896789
9911916321

# सत्य सुसमाचार

प्रभु यीशु मसीह के सुसमाचार को आप रेडियो पर भी श्री-लंका से सुन सकते हैं।

प्रत्येक मंगलवार को

सुबह 8-8:15 तक

वक्ता: सनी डेविड

*पता:*

सत्य सुसमाचार
पोस्ट बॉक्स 3815
नई दिल्ली-110049

*प्रकाशक* :
मसीह की कलीसिया
पोस्ट बॉक्स नं. 3815
नई दिल्ली-110049

**मुद्रक** :
गाईड आफ़सेट प्रिन्टर्स
कीर्ती नगर, नई दिल्ली।

# The Gospel of Christ

*by*

J. C. Choate

*Translated in Hindi by*

Sunny David

*Published by*

CHURCH OF CHRIST

Box No. 3815, New Delhi-110049

# Contents


| | | *Page* |
|---|---|---|
| 1. | The Gospel of Christ | 9 |
| 2. | The Facts of the Gospel | 15 |
| 3. | The Gospel Call | 21 |
| 4. | Obedience to the Gospel | 27 |
| 5. | Hearing the Gospel | 33 |
| 6. | Faith in God | 40 |
| 7. | Repentance of Sins | 47 |
| 8. | Confession of Christ | 52 |
| 9. | Baptism for the Remission of sins | 58 |
| 10. | Blessings of the Gospel | 65 |
| 11. | Preaching the Gospel | 71 |
| 12. | Preaching Other Gospels | 77 |
| 13. | Hindering the Gospel | 83 |

# विषय सूची


| | | |
|---|---|---|
| 1. | मसीह का सुसमाचार | 9 |
| 2. | सुसमाचार की विशेषताएं | 15 |
| 3. | सुसमाचार की बुलाहट | 21 |
| 4. | सुसमाचार को मानना | 27 |
| 5. | सुसमाचार को सुनना | 33 |
| 6. | परमेश्वर में विश्वास | 40 |
| 7. | पापों से मन फिराना | 47 |
| 8. | मसीह का अंगीकार | 52 |
| 9. | पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा | 58 |
| 10. | सुसमाचार के वरदान | 65 |
| 11. | सुसमाचार का प्रचार | 71 |
| 12. | अन्य सुसमाचारों का प्रचार | 77 |
| 13. | सुसमाचार को रोकना | 83 |

# मसीह का सुसमाचार

यीशु मसीह के सुसमाचार के बारे में नए नियम में हम कई जगह पढ़ते हैं। और हम स्वयं भी सुसमाचार के बारे में अकसर बहुत कुछ कहते हैं। परन्तु, सुसमाचार क्या है? यीशु मसीह का सुसमाचार क्या है? आइए, पवित्र शास्त्र में से हम इस प्रश्न का उत्तर देखें। प्रेरित पौलुस एक जगह लिखकर कहता है, "क्योंकि जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा। फिर जिस पर उन्होंने विश्वास नहीं किया, वे उसका नाम क्योंकर लें? और जिसकी नहीं सुनी उस पर क्योंकर विश्वास करें? और प्रचारक बिना क्योंकर सुनें? और यदि भेजे न जाएं, तो क्योंकर प्रचार करें? जैसा लिखा है, कि उनके पाँव क्या ही सुहावने हैं, जो अच्छी बातों का सुसमाचार सुनाते है।" (रोमियों 10:13-15)। सो, सुसमाचार शब्द का मूल अर्थ है: खुश खबरी, आनन्द का समाचार, मुक्ति, सत्य वचन, प्रतिज्ञा, और आशा। और यह समाचार प्रत्येक अन्य समाचार से बिलकुल अलग और निराला है क्योंकि इसमें हमें मसीह की खुश-खबरी मिलती है।

यह खुश खबरी यीशु मसीह की मृत्यु और उसके गाड़े जाने तथा जी उठने पर आधारित है। सो हम देखते हैं, कि प्रेरित पौलुस कुरिन्थुस में मसीही भाइयों को अपनी पत्री में लिखकर इस प्रकार कहता है, "हे भाइयो, मैं तुम्हें वही सुसमाचार बताता हूं जो पहिले सुना चुका हूं, जिसे तुमने अंगीकार भी किया था और जिसमें तुम स्थिर भी हो। उसी के द्वारा तुम्हारा उद्धार भी होता है, यदि उस सुसमाचार को जो मैंने तुम्हें सुनाया था स्मरण रखते हो; नहीं तो तुम्हारा विश्वास करना व्यर्थ हुआ। इसी कारण

मैंने सबसे पहिले तुम्हें वही बात पहुंचा दी, जो मुझे पहुंची थी, कि पवित्र शास्त्र के वचन के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिये मर गया, और गाड़ा गया; और पवित्र शास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा।" (1 कुरिन्थियों 15:1-4)। परन्तु यह बात किस प्रकार एक खुश खबरी हो सकती है? इसलिये, क्योंकि वास्तव में यीशु मसीह की मृत्यु और गाड़े जाने और जी उठने के द्वारा ही मनुष्य का उद्धार होता है और उसे अनन्त जीवन की आशा मिलती है। और लेखक आगे फिर कहता है, "क्योंकि मैं सुसमाचार से नहीं लजाता इसलिये कि वह हर एक विश्वास करनेवाले के लिये, पहिले तो यहूदी, फिर यूनानी के लिये उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ है। क्योंकि उसमें परमेश्वर की धार्मिकता विश्वास से, और विश्वास के लिये प्रगट होती है; जैसा लिखा है, कि विश्वास से धर्मी जन जीवित रहेगा।" (रोमियों 1:16-17)।

हम सब जानते हैं कि एक खुश खबरी का हमारे प्रति-दिन के जीवन में क्या महत्त्व होता है। जब किसी प्रकार की कोई आशीष हमें मिलती है तो हम सब बड़े ही प्रसन्न होते हैं, और हम उसके बारे में सभी लोगों को बताना चाहते हैं। और ऐसा स्वाभाविक ही है। ठीक ऐसा ही उद्धार के उस सुसमाचार के बारे में भी होना चाहिए जो यीशु मसीह के द्वारा हमें मिलता है। यदि हमने प्रभु यीशु के सुसमाचार की आज्ञाओं का पालन किया है, और इस प्रकार उसके अनुग्रह से हमारा उद्धार हुआ है, तो हमें चाहिए कि हम संसार में सभी लोगों को इस खुश खबरी के बारे में बताएं। इसीलिये प्रभु यीशु ने कहा था: "तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो। जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।" (मरकुस 16:15-16)।

इसी प्रकार, पवित्र शास्त्र में परमेश्वर के सुसमाचार का वर्णन भी हुआ है। लिखा है, "पौलुस की ओर से जो यीशु मसीह का दास है, और

प्रेरित होने के लिये बुलाया गया, और परमेश्वर के उस सुसमाचार के लिये अलग किया गया है, जिसकी उसने पहिले ही से अपने भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा पवित्रशास्त्र में, अपने पुत्र हमारे प्रभु यीशु मसीह के विषय में प्रतिज्ञा की थी, जो शरीर के भाव से तो दाऊद के वंश से उत्पन्न हुआ। और पवित्रता की आत्मा के भाव से मरे हुओं में से जी उठने के कारण सामर्थ के साथ परमेश्वर का पुत्र ठहरा है। जिसके द्वारा हमें अनुग्रह और प्रेरिताई मिली; कि उसके नाम के कारण सब जातियों के लोग विश्वास करके उसकी मानें। जिनमें से तुम भी यीशु मसीह के होने के लिये बुलाए गए हो। उन सब के नाम जो रोम में परमेश्वर के प्यारे हैं और पवित्र होने के लिये बुलाये गए हैं। हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे।" (रोमियों 1:1-7)। इसी तरह से, लेखक एक अन्य स्थान पर परमेश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार का उल्लेख करके यों कहता है: "परन्तु मैं अपने प्राण को कुछ नहीं समझता, कि उसे प्रिय जानूं, वरन यह कि मैं अपनी दौड़ को, और उस सेवकाई को पूरी करूं, जो मैंने परमेश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार पर गवाही देने के लिये प्रभु यीशु से पाई है।" (प्रेरितों 20:24)! ये सभी वर्णन हमारा ध्यान उस एकता के ऊपर दिलाते हैं जो परमेश्वर और यीशु मसीह के बीच विद्यमान है। जैसा कि प्रत्यक्ष ही है, कि जगत को सुसमाचार देने के लिये परमेश्वर ने ही मसीह को जगत में भेजा था। इसीलिये मसीह के सुसमाचार को परमेश्वर का सुसमाचार भी कहा जा सकता है।

फिर, हम महिमा के सुसमाचार के बारे में पढ़ते हैं: "यही परमधन्य परमेश्वर की महिमा के उस सुसमाचार के अनुसार है, जो मुझे सौंपा गया है।" (1 तीमुथियुस 1:11)।

फिर, "परन्तु यदि हमारे सुसमाचार पर परदा पढ़ा है, तो यह नाश होनेवालों ही के लिये पड़ा है। और उन अविश्वासियों के लिये, जिनकी बुद्धि को इस संसार के ईश्वर ने अन्धी कर दिया है, ताकि मसीह जो

सुसमाचार का प्रतिरूप है, उसके तेजोमय सुसमाचार का प्रकाश उन पर न चमके। क्योंकि हम अपने को नहीं, परन्तु मसीह यीशु को प्रचार करते हैं, कि वह प्रभु है; और अपने विषय में यह कहते हैं, कि हम यीशु के कारण तुम्हारे सेवक हैं।" (2 कुरिन्थियों 4:3-5)। यहां सुसमाचार को महिमायुक्त या तेजोमय कहा गया है। जिसका अर्थ है कि यह स्वर्गीय, और अनन्त है, क्योंकि यह परमेश्वर तथा यीशु मसीह की ओर से है।

मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना की पुस्तकों में कई जगह इसे "राज्य का सुसमाचार" भी कहा गया है। मत्ती 4:23 में हम पढ़ते हैं, "और यीशु सारे गलील में फिरता हुआ उनकी सभाओं में उपदेश करता, और लोगों की हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा।" और फिर, "यूहन्ना के पकड़वाए जाने के बाद यीशु ने गलील में आकर परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार प्रचार किया। और कहा, समय पूरा हुआ है, और परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है; मन फिराओ और सुसमाचार पर विश्वास करो।" (मरकुस 1:14, 15)। इस समय के दौरान, यीशु ने, भविष्य में आनेवाले राज्य के सुसमाचार का प्रचार किया था अर्थात उस समय तक वास्तव में राज्य की स्थापना नहीं हुई थी, परन्तु होने जा रही थी। किन्तु बाद में, प्रभु की मृत्यु, गाड़े जाने तथा जी उठने के आधार पर, सचमुच में सुसमाचार का प्रचार किया गया, और जिन लोगों ने सुसमाचार में दी गई आज्ञाओं का पालन किया उन्हें उद्धार मिला और प्रभु की कलीसिया अर्थात् उसके राज्य में वे उसके द्वारा मिलाए गए। (प्रेरितों 2)।

फिर, हमें उद्धार के सुसमाचार का वर्णन मिलता है। इफिसुस में रहनेवाले, मसीही लोगों को लिखकर प्रेरित पौलुस ने कहा था: "और उसी में तुम पर भी, जब तुमने सत्य का वचन सुना, जो तुम्हारे उद्धार का सुसमाचार है, और जिस पर तुमने विश्वास किया, प्रतिज्ञा किए हुए पवित्र आत्मा की छाप लगी।" (इफिसियों 1:13)। सो इस प्रकार हम देखते हैं कि उद्धार सुसमाचार के द्वारा ही होता है। प्राय: जब हम सुसमाचार के

उद्धार की योजना का वर्णन करते हैं, तो इस तरह से भी हम प्रभु की उद्धार की योजना या मनुष्य को बचाने के उसके मार्ग को ही सम्बोधित करते हैं।

इसी प्रकार हमें शान्ति के सुसमाचार के विषय में भी मिलता है। जैसा कि अभी हमने रोमियों 10:15 में पढ़ा था, वहां लेखक कहता है, "कि उनके पांव क्या ही सुहावने हैं, जो अच्छी बातों का सुसमाचार सुनाते हैं।" और फिर लिखा है, "सो सत्य से अपनी कमर कसकर, और धार्मिकता की झिलम पहिनकर। और पांवों में मेल (शांति) के सुसमाचार की तैयारी के जूते पहिनकर। और उन सबके साथ विश्वास की ढाल लेकर स्थिर रहो जिससे तुम उस दुष्ट के सब जलते हुए तीरों को बुझा सको।" (इफिसियों 6:14-16)। सुसमाचार के द्वारा मनुष्य को शान्ति मिलती है– मन की शान्ति, आत्म-शान्ति, आपसी मेल। यीशु मसीह शांति का दाता है और उसके सुसमाचार के द्वारा हमें वैसी ही शांति मिलती है जो स्वयं उसके पास थी– जिसका अर्थ है, परमेश्वर के साथ मेल। और यह वास्तव में सुसमाचार है।

ऐसे ही, एक अन्य स्थान पर हमें आशा के सुसमाचार के बारे में भी मिलता है: "और उसने उसकी देह में मृत्यु के द्वारा तुम्हारा भी मेल कर लिया जो पहिले निकाले हुए थे और बुरे कामों के कारण मन से बैरी थे। ताकि तुम्हें अपने सम्मुख पवित्र और निष्कलंक, और निर्दोष बनाकर उपस्थित करे। यदि तुम विश्वास की नेव पर दृढ़ बने रहो और उस सुसमाचार की आशा को जिसे तुमने सुना है न छोड़ो, जिसका प्रचार आकाश के नीचे की सारी सृष्टि में किया गया है; और जिसका मैं पौलुस सेवक बना।" (कुलुस्सियों 1:21-23)। सुसमाचार को मानने के कारण मनुष्य के साथ जीवन की, बल्कि अनन्त जीवन की आशा आती है। लेखक का यहां यही अभिप्राय है। सच्ची आशा प्राप्त करने का और कोई उपाय नहीं है।

इसी तरह से, हम यह भी देखते हैं, कि प्रेरित पौलुस अपनी पत्रियों में कई जगह "मेरा सुसमाचार" या "हमारे सुसमाचार" का वर्णन करता है। इसका क्या अर्थ है? यहां उसका अभिप्राय उसी सुसमाचार से है जिसे उसने और अन्य लोगों ने प्राप्त किया था, और जिसका प्रचार सब लोगों में करने की आज्ञा प्रभु ने दी थी। इस सम्बन्ध में, वह कहता है, "क्योंकि हमारा सुसमाचार तुम्हारे पास न केवल वचन मात्र ही में वरन् सामर्थ और पवित्र आत्मा, और बड़े निश्चय के साथ पहुंचा है; जैसा तुम जानते हो, कि हम तुम्हारे लिए तुम से कैसे बन गए थे" (1 थिस्सलुनीकियों 1:5)। यह बात भी ध्यान देने योग्य है, जैसा कि यहाँ, और रोमियों 1:16 में भी हम देखते हैं, कि सुसमाचार सामर्थपूर्ण है क्योंकि जो उस पर विश्वास लाकर उसे मानते हैं उनका उद्धार होता है।

सो पवित्र शास्त्र के वचन अनुसार यही सुसमाचार है। यह साधारण है, तौभी सामर्थपूर्ण है। यह उतना ही नया है जितना कि आज का दिन और उतना ही अनन्त है, जितना कि स्वयं मसीह। यह मनुष्य का उद्धार करता है और उसे आशा देता है। सुसमाचार केवल एह ही है और केवल इसी का प्रचार सब लोगों में होना आवश्यक है। यह मसीह का तथा परमेश्वर का, और तेजोमय सुसमाचार है। इसके द्वारा हमें आशीष मिलती है। यह हमें चुनौती देता है, और हमें उत्तरदायी बनाता है। यह प्रत्येक के लिये, और सब लोगों के लिये है।

# सुसमाचार की विशेषताएं

प्रभु यीशु मसीह मारा गया, गाड़ा गया, और जी उठा। यह बात पवित्र शास्त्र हमें बड़ी ही स्पष्टता से सिखाता है। यीशु के बारे में घटित इन बातों को सुसमाचार की विशेषताएं बताया गया है। कुरिन्थुस में मसीही भाईयों को लिखी अपनी एक पत्री में प्रेरित पौलुस ने इन्हीं बातों का वर्णन किया था, और बताया था कि उनके उद्धार से इन विशेषताओं का कितना बड़ा सम्बन्ध है; वह कहता है: "हे भाइयो, मैं तुम्हें वही सुसमाचार बताता हूं, जो पहिले सुना चुका हूं, जिसे तुमने अंगीकार भी किया था और जिसमें तुम स्थिर भी हो। उसी के द्वारा तुम्हारा उद्धार भी होता है, यदि उस सुसमाचार को जो मैंने तुम्हें सुनाया था स्मरण रखते हो; नहीं तो तुम्हारा विश्वास करना व्यर्थ हुआ। इसी कारण सबसे पहिले मैंने तुम्हें वही बात पहुंचा दी, जो मुझे पहुंची थी, कि पवित्र शास्त्र के वचन के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिए मर गया। और गाड़ा गया; और पवित्र शास्त्र के अनुसार तीसरे दिन भी उठा।" (1 कुरिन्थियों 15:1-4)। अर्थात्, यीशु मसीह का सुसमाचार इन्हीं प्रमुख सत्यों के ऊपर आधारित है। यदि यीशु मारा और गाड़ा न जाता और कब्र में से न जी उठता, तो आज हमारे पास सुसमाचार न होता, और इसलिए उद्धार भी न होता। परन्तु यीशु मारा गया और गाड़ा गया और जी भी उठा, इसलिए सुसमाचार के लिए यह एक नेव हमारे पास है, और इस कारण इस वास्तविकता ने संसार को बदल डाला है।

इसलिये, अब सुसमाचार की इन विशेषताओं के ऊपर हम एक-एक

करके विचार करेंगे, और हम देखेंगे कि हमारे लिए व्यक्तिगत रूप से इनका क्या महत्व है।

## 1. यीशु मसीह की मृत्यु :

बाइबल में इस बात पर कई जगह हमारा ध्यान दिलाया गया है कि मसीह मारा गया था। हम यूं पढ़ते हैं: "जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो। जिसने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। बरन अपने आपको ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया। और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आपको दीन किया, और यहां तक आज्ञाकारी रहा, कि मृत्यु, हां, क्रूस की मृत्यु भी सह ली।" (फिलिप्पियों 2:5-8)। और, "पर हम यीशु को जो स्वर्गदूतों से कुछ ही कम किया गया था, मृत्यु का दुख उठाने के कारण महिमा और आदर का मुकुट पहिने हुए देखते हैं; ताकि परमेश्वर के अनुग्रह से हर एक मनुष्य के लिए मृत्यु का स्वाद चखे।" (इब्रानियों 2:9)।

सो मसीह यीशु किसके लिए मरा था? जैसा कि अभी हमने ऊपर पढ़ा, वह प्रत्येक मनुष्य के लिए बलिदान हुआ था। फिर, पवित्र शास्त्र में एक और जगह हम यूं पढ़ते हैं, कि वह पापियों के लिए मरा था। लिखा है, "परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिए मरा।" (रोमियों 5:8)। परन्तु वह पापियों के लिए क्यों मरा था? इसलिये ताकि उन्हें उद्धार और आशा दे। जैसा कि हम पढ़ते हैं: "वह यह चाहता है, कि सब मनुष्यों का उद्धार हो; और वे सत्य को भली-भांति पहचान लें।" (1 तीमुथियुस 2:4)। लिखा है, "प्रभु अपनी प्रतिज्ञा के विषय में देर नहीं करता, जैसी

देर कितने लोग समझते हैं; पर तुम्हारे विषय में धीरज धरता है, और नहीं चाहता, कि कोई नाश हो; बरन यह कि सबको मन फिराव का अवसर मिले।" (2 पतरस 3:9)।

सो इसका अर्थ यह हुआ, कि यीशु ने आपके और मेरे लिए अपनी जान दी थी। ज़रा सोचिये! यद्यपि हम पापी तथा परमेश्वर के विरोधी हैं, और इस प्रकार के अनुग्रह तथा दया के योग्य भी नहीं हैं, तौभी यीशु मसीह ने हमारे कारण स्वर्ग छोड़कर इस पाप-पूर्ण पृथ्वी पर आना और क्रूस के ऊपर अपनी जान देना स्वीकार कर लिया, ताकि हमारा उद्धार हो और हमें अनन्त जीवन की आशा मिल सके। (रोमियों 5:6, 7)। यह बात कितनी अद्‌भुत है! किन्तु इस बात पर ध्यान दें, कि वह इसी प्रकार संसार के प्रत्येक मनुष्य के लिए मारा गया था– अर्थात् न केवल हमारे लिये ही, पर उन सबके लिए भी जो हम से पहिले थे, और उन सबके लिए भी जो हमारे बाद होंगे। सो हमें प्रभु के कितने अधिक धन्यवादी होना चाहिए, और फलस्वरूप उसके आज्ञा माननेवाले तथा उसके प्रति विश्वासी बनना चाहिए। क्या यह उचित नहीं है?

## 2. यीशु मसीह का गाड़ा जाना :

क्रूस के ऊपर यीशु की मृत्यु के बाद, हम यूं पढ़ते हैं "जब सांझ हुई तो यूसुफ़ नाम अरिमतियाह का एक धनी मनुष्य जो आप ही यीशु का चेला था, आया: उसने पीलातुस के पास जाकर यीशु की लोथ मांगी। इस पर पीलातुस ने दे देने की आज्ञा दी। यूसुफ़ ने लोथ को लेकर उसे उज्जवल चादर में लपेटा। और उसे अपनी नई कब्र में रखा, जो उसने चट्टान में खुदाई थी। और कब्र के द्वार पर बड़ा पत्थर लुढ़काकर चला गया, और मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम वहां कब्र के सामने बैठी थीं।" (मती 26:57-61)।

अब, यदि साधारण रूप से देखा जाए तो यीशु की मृत्यु के बाद उसके गाड़े जाने में हमें कोई विशेषता नज़र नहीं आती। क्योंकि मनुष्य मरते हैं और गाड़े भी जाते हैं। संसार में चारों ओर यह बात देखने में आती है, और संसार की उत्पत्ति से ही यह बात सच है। परन्तु बात यह है कि प्रभु यीशु ने अपने जीते जी यह प्रतिज्ञा की थी कि जब वह मर जाएगा और गाड़ा जाएगा तो वह फिर जी उठेगा। उसने एक जगह यूं कहा था, "कि इस मन्दिर को ढा दो, और मै, उसे तीन दिन में खड़ा कर दूंगा।" (यूहन्ना 2:19)। इसमें कोई संदेह नहीं कि सुननेवाले उस समय उसकी बात न समझे हों, परन्तु यदि उन्होंने समझा भी होता तो क्या वे उसकी बात पर विश्वास करते? सो फिर उसकी मृत्यु और गाड़े जाने के बाद क्या हुआ था? जैसा कि प्रत्यक्ष ही लगता है, उसके चेले निराशा में डूब गए थे, उन्हें लगा था, कि अब सब कुछ समाप्त हो गया है। किन्तु, वास्तव में क्या हुआ था? जिस प्रकार यीशु ने कहा था, वह जी उठा था।

## 3. यीशु का जी उठना :

यदि मसीह क्रूस पर मरने के बाद कब्र में दफ़न ही रहता तो कदाचित आज संसार में उसका नाम तक भी याद न किया जाता, और यदि किया भी जाता तो शायद इसलिये कि वह एक झूठा व्यक्ति था। यदि वह केवल मरा और गाड़ा ही गया होता, तो वह किसी भी अन्य मनुष्य से बढ़कर कुछ न ठहरता। परन्तु यीशु वास्तव में भिन्न था। वह परमेश्वर का पुत्र था। उसने कहा था, कि वह कब्र में से जी उठेगा, और वह सचमुच में जी उठा था। (मत्ती 28)। और उसके पुनरुत्थान के कारण ही आज जगत में उद्धार की आशा है, और इस बात का आश्वासन है कि एक दिन ऐसे ही सब लोग जी उठेंगे, और हमें, जो उसमें विश्वास रखते हैं, अनन्त जीवन की आशा है।

परन्तु अब आईए हम यह देखें कि पवित्र शास्त्र प्रभु यीशु के पुनरुत्थान के विषय में क्या कहता है। लिखा है, कि वह, "पवित्रता की आत्मा के भाव से मरे हुओं में से जी उठने के कारण सामर्थ के साथ परमेश्वर का पुत्र ठहरा है।" (रोमियों 1:4)। "और मैं उसको और उसके मृत्युजंय (जी उठने) की सामर्थ को, और उसके साथ दुखों में सहभागी होने के मर्म को जानूं, और उसकी मृत्यु की समानता को प्राप्त करूं।" (फिलिप्पियों 3:10)। "हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो, जिसने यीशु मसीह के मरे हुओं में से जी उठने के द्वारा, अपनी बड़ी दया से हमें जीवित आशा के लिये नया जन्म दिया।" (1 पतरस 1:3)। "और उसी पानी का दृष्टान्त भी, अर्थात् बपतिस्मा, यीशु मसीह के जी उठने के द्वारा, अब तुम्हें बचाता है; (उस से शरीर के मैल को दूर करने का अर्थ नहीं है, परन्तु शुद्ध विवेक से परमेश्वर के वश में हो जाने का अर्थ है)।" (1 पतरस 3:21)। "क्योंकि यह जानते हैं, कि मसीह मरे हुओं में से जी उठकर फिर मरने का नहीं, उस पर फिर मृत्यु की प्रभुता नहीं होने की।" (रोमियों 6:9)। "क्योंकि मसीह इसीलिये मरा और जी भी उठा कि वह मरे हुओं और जीवतों, दोनों का प्रभु हो।" (रोमियों 14:9)।

सो क्योंकि मसीह मारा गया, और गाड़ा गया, और मुर्दों में से जी भी उठा, इसलिए अब वह हमारा प्रभु और हमारा उद्धारकर्त्ता है। वह परमेश्वर के दाहिने बैठकर राज्य करता है (प्रेरितों 2), और उसने प्रतिज्ञा की है कि वह एक दिन फिर वापस आएगा। (यूहन्ना 14:1-3)।

यीशु मसीह की मृत्यु के द्वारा, उसका लोहू इसलिये बहाया गया था ताकि, मनुष्यों को पापों की क्षमा मिल सके। (मत्ती 26:28; इफिसियों 1:7)। और जब मनुष्य यीशु मसीह के सुसमाचार की आज्ञाओं का पालन करता है तो वह यीशु के बहाए लोहू के सम्पर्क में आ जाता है, और इस

प्रकार उसे पापों की क्षमा प्राप्त होती है। (प्रेरितों 2:38; 22:16)। अपने अगले पाठ में हम इस विषय में और अधिक स्पष्टता से देखेंगे, कि ऐसा किस प्रकार होता है।

परन्तु हम सब यह एक बात अवश्य याद रखें, कि प्रभु यीशु के पुनरुत्थान के परिणाम स्वरूप वह आज भी जीवित है! और उसके सच्चे अनुयायी होने के कारण, हम भी उसी की तरह जीते हैं, और हम हमेशा उसके साथ राज्य करेंगे तथा रहेंगे, हाँ, युगानुयुग।

# सुसमाचार की बुलाहट

आज धार्मिक दृष्टिकोण से संसार में अनेक लोगों के इस विषय पर विभिन्न विचार हैं, कि परमेश्वर मनुष्य को उद्धार पाने के लिए अपने पास किस प्रकार बुलाता है। इन में से कुछ मुख्य विचारों का वर्णन हम यहां करेंगे। सर्वप्रथम कुछ लोग यूं कहते हैं कि परमेश्वर उनसे एकान्त में बातें करता है। दूसरे, कुछ कहते हैं कि यीशु मसीह किसी स्वपन या दर्शन के द्वारा उनके पास आता है। और तीसरे, कुछ लोगों का विश्वास है कि किसी विशेष वा अद्‌भुत घटना के फलस्वरूप परमेश्वर उन्हें अपने पास बुलाता है। सो इन तीनों ही विचारों से हम यह देखते हैं, कि लोगों का मत है कि इस प्रकार प्रभु उनका उद्धार करता है या उन तक कोई विशेष समाचार पहुंचाता हैं। परन्तु क्या बाइबल भी हमें यही सिखाती है? यहां एक चेतावनी आवश्यक है, अर्थात् यह, कि उन लोगों से चौकस रहिए जो सदा इस प्रकार की बातें सुनते वा देखते रहते हैं।

इस सम्बन्ध में, सर्वप्रथम हमें यह देखना चाहिए कि क्या परमेश्वर आज स्वयं लोगों से व्यक्तिगत रूप से बोलता है? और यह जानना बिल्कुल सरल हैं। क्योंकि इब्रानियों 1:1-2 में हम यूं पढ़ते हैं: "पूर्व युग में परमेश्वर ने बाप-दादों से थोड़ा-थोड़ा करके और भांति-भांति से भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बातें करके। इन दिनों के अन्त में हम से अपने पुत्र के द्वारा बातें कीं। जिसे उसने सारी वस्तुओं का वारिस ठहराया और उसी के द्वारा उसने सारी सृष्टि रची है।" सो यहां से हम यह सीखते हैं कि परमेश्वर आज हम से अपने पुत्र यीशु के द्वारा बोलता है। इसी बात को

हम मत्ती 17:5 में भी देखते हैं, जहाँ हमें यीशु मसीह के रूपान्तर का वर्णन मिलता है। वहां परमेश्वर ने कहा था: "यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं प्रसन्न हूं: इसकी सुनों।"

फिर, प्रश्न यह है, कि क्या आज परमेश्वर स्वयं मनुष्य से बोलता है, या वह केवल मसीह के द्वारा ही बोलता है? यह बात बाइबल में से यूहन्ना 20:30-31 को पढ़ने से स्पष्ट हो जाती है, "यीशु ने और भी बहुत चिन्ह् चेलों के सामने दिखाए, जो इस पुस्तक में लिखे नहीं गए। परन्तु ये इसलिये लिखे गए हैं, कि तुम विश्वास करो, कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है: और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ।" सो, अब ये बातें क्यों लिखी गई हैं? ताकि हम विश्वास लाएं। परन्तु ये कहां पर लिखी गई हैं? नए नियम में। सो इसलिये आज यदि हम नए नियम में लिखी बातों को पढ़ेंगे तो हमें परमेश्वर की इच्छा का ज्ञान हो जाएगा।

फिर हम पढ़ते हैं, "सो विश्वास सुनने से, और सुनना मसीह के वचन से होता है।" (रोमियों 10:17)। प्रश्न: क्या विश्वास किसी और तरह से आता है? यदि ऐसा है, तो पवित्र शास्त्र इस सम्बन्ध में हमें नहीं बताता। यह सच है कि ऐसे कुछ लोग हैं जो अक्सर कहते हैं, कि हमने यह सुना, या वह देखा, या हमें यह या वह अनुभव हुआ, इत्यादि, परन्तु परमेश्वर का वचन इस प्रकार की बातें नहीं सिखाता। किन्तु, वह सिखाता है: कि विश्वास परमेश्वर के वचन को सुनने से आता है। इसलिये, केवल एक ही बाइबल है, और केवल एक ही विश्वास है। (इफिसियों (4:5)।

क्योंकि विश्वास परमेश्वर के वचन को सुनने से होता है, इसी कारण हमें वचन को पढ़ने (2 तीमुथियुस 2:15), और पवित्रशास्त्र में से ढूढ़ने (यूहन्ना 5:39), इत्यादि, के महत्व को सिखाया गया है। वास्तव में, इसी कारण पवित्र शास्त्र की बातों पर इतना अधिक बल दिया गया है, और बताया गया है कि वे ईश्वरीय प्रेरणा से लिखे गए हैं और हर एक बात के लिये लाभदायक और आवश्यक हैं। (2 तीमुथियुस 3:16,17)।

इसी प्रकार, बाइबल में हमें यह बताया है कि प्रभु ने अपना सुसमाचार मिट्टी के बरतनों के भीतर रखा है। सुनिये, कि प्रेरित पौलुस ने क्या कहा था: "क्योंकि हम अपने को नहीं, परन्तु मसीह यीशु को प्रचार करते हैं, कि वह प्रभु है; और अपने विषय में यह कहते हैं, कि हम यीशु के कारण तुम्हारे सेवक है। इसलिये कि परमेश्वर ही है, जिसने कहा, कि अन्धकार में से ज्योति चमके; और वही हमारे हृदयों में चमका, कि परमेश्वर की महिमा की पहिचान की ज्योति यीशु मसीह के चेहरे से प्रकाशमान हो। परन्तु हमारे पास यह धन मिट्टी के बरतनों में रखा है, और यह असीम सामर्थ हमारी ओर से नहीं, वरन परमेश्वर ही की ओर से ठहरे।" (2 कुरिन्थियों 4:5-7)। वह यहां क्या कह रहा है? वह कह रहा है, कि प्रभु ने मनुष्यों को चुना है, जैसे कि स्वयं पौलुस को चुना था, कि वे अन्य लोगों तक उसके सुसमाचार को पहुंचाए। अब उद्धार पानेवाले लोगों की उन घटनाओं पर विचार करके देखें जिनका वर्णन हमें बाइबल में प्रेरितों के कामों की पुस्तक में मिलता है। इनमें क्या आप को कोई ऐसा उदाहरण मिलता है, जहां प्रभु ने स्वयं किसी व्यक्ति को कहा हो कि उसे उद्धार पाने के लिये क्या करना चाहिए? नहीं। उदाहरण स्वरूप, हम देखते हैं, प्रेरितों 8 अध्याय में, कि प्रभु के एक स्वर्गदूत ने फिलिप्पुस को यह कहकर भेजा था, कि वह जाकर खोजे को मसीह का सुसमाचार सुनाए। प्रश्न: वह स्वर्गदूत फिलिप्पुस को सामरिया में छोड़कर, कि वह वहां लोगों को प्रचार करता रहे, स्वयं ही खोजे के पास क्यों नहीं चला गया? इसलिये, क्योंकि प्रभु ने अपने सुसमाचार को मिट्टी के बर्तनों में रखा है। इस कारण, यह मनुष्य का कर्त्तव्य है, कि वह सुसमाचार को अन्य लोगों को दे। इसी प्रकार, प्रेरितों 9 अध्याय में हम शाऊल के बारे में पढ़ते हैं, कि वह प्रभु से पूछता है कि उद्धार पाने के लिये वह क्या करे। प्रभु ने उससे कहा, कि तू उठकर नगर के भीतर जा और वहां तुझे बताया जाएगा कि तुझे क्या करना चाहिए। और फिर हम देखते हैं कि हनन्याह नाम का

एक प्रचारक उस के पास आकर उसे इस विषय में बताता है। (प्रेरितों 22:16)। प्रश्न : प्रभु ने ही स्वयं उसे क्यों नहीं बता दिया? इसलिये, क्योंकि वह ऐसा नहीं करना चाहता। और ऐसा ही हमें प्रेरितों के कामों की पुस्तक में मिलनेवाली मन-परिवर्तन की प्रत्येक घटना में भी मिलता है। यही कारण है कि हम जानते हैं, कि आज प्रभु पवित्र शास्त्र के माध्यम के अतिरिक्त किसी भी मनुष्य से व्यक्तिगत रूप से नहीं बोल रहा है, और न किसी मनुष्य पर व्यक्तिगत रूप से प्रगट होकर उसे बता रहा है कि उद्धार पाने के लिये उसे क्या करना चाहिए। और मान लें कि आज वह यहां हो भी तौभी हम जानते हैं कि वह नहीं बताएगा (प्रेरितों 9), और यदि वह बताएगा भी तो वह उस सुसमाचार से बिल्कुल भी भिन्न न होगा जो पहिले सुनाया जा चुका है। (गलतियों 1:6-9)। सो जिस काम को करने की आज्ञा उसने पहिले ही मनुष्य को दे दी है उसी काम को करने के लिये उसके आने की अब कोई आवश्यकता नहीं है। (मरकुस 16:15, 16)। दूसरे शब्दों में, जिस काम को मनुष्य स्वयं कर सकता है प्रभु उस काम को मनुष्य के लिये नहीं करेगा।

क्योंकि सुसमाचार को मिट्टी के बर्तनों में रखा गया है, इसी कारण हम देखते हैं, कि एक प्रचारक के द्वारा अन्य लोगों तक सुसमाचार को ले जाने के महत्त्व पर बाइबल में इतना अधिक बल दिया गया है। मसीह यीशु ने कहा था, "तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो। जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।" (मरकुस 16:15, 16)। और फिर, हम पढ़ते हैं, "क्योंकि जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा। फिर जिस पर उन्होंने विश्वास नहीं किया, वे उसका नाम क्योंकर लें? और जिसकी नहीं सुनी उस पर क्योंकर विश्वास करें? और प्रचारक बिना क्योंकर सुनें? और यदि भेजे न जाएं, तो क्योंकर प्रचार करें? जैसा लिखा है, कि उनके पांव क्या ही सुहावने हैं, जो अच्छी बातों का

सुसमाचार सुनाते हैं!" (रोमियों 10:13-15)। सो, लिखा है, "कि तू वचन को प्रचार कर; समय और असमय तैयार रह, सब प्रकार की सहनशीलता, और शिक्षा के साथ उलहाना दे, और डांट, और समझा।" (2 तीमुथियुस 4:2)। इसलिये, आप देख सकते हैं कि प्रभु ने इसी रीति से अपनी इच्छा को प्रगट करने को चुना है। और इसे समझने में कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए।

सो, जबकि यह सच है, इसी कारण पौलुस ने थिस्सलुनीकियों की पत्री में, मसीह में अपने भाइयों को लिखकर यूं कहा था, "जिसके लिए उसने तुम्हें हमारे सुसमाचार के द्वारा बुलाया, कि तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह की महिमा को प्राप्त करो।" (2 थिस्सलुनीकियों 2:14)। अब इस से उसका क्या अभिप्राय है? पौलुस कह रहा है, कि प्रभु ने थिस्सलुनीकियों के लोगों को सुसमाचार के द्वारा बुलाया था। अर्थात्, पौलुस ने उन्हें सुसमाचार सुनाया था, उन्होंने सुनकर उसे माना था, और इस प्रकार वे मसीह के पास आए थे। या इसे हम यूं कह सकते हैं, कि मसीह ने सुसमाचार के प्रचार के द्वारा उन्हें उद्धार पाने के लिए बुलाया था।

अब, आज इस बात को हम किस प्रकार देखते हें? आज हम किस प्रकार बुलाए जाते हैं? हम में से जो मसीही हैं वे सब इसी प्रकार उसी सुसमाचार के द्वारा बुलाए गए थे। अर्थात् हमें सुसमाचार सुनाया गया, हमने सुना, उस पर विश्वास किया, उसे माना, और तब प्रभु ने हमारा उद्धार किया। और जब इस सुसमाचार को आज हम दूसरे लोगों तक ले जाते हैं, तो इसी रीति से अन्य लोगों का भी उद्धार होता है। किन्तु ऐसा नहीं है, कि प्रभु किसी एक को तो किसी प्रकार बुला रहा है, और दूसरे को किसी और प्रकार से। सच्चाई यह है कि प्रभु प्रत्येक मनुष्य को एक ही सुसमाचार के द्वारा बुलाता है।

सो, जबकि यह तो सच है, कि आज परमेश्वर बोलता है, परन्तु यह भी सच है, कि वह मसीह यीशु के द्वारा बोलता है। और मसीह अपने

लिखे वचन के द्वारा बोलता है। इसलिये जिन्होंने मसीह के सुसमाचार को माना है, उमकी यह ज़िम्मेदारी है कि वे अन्य लोगों को भी सुसमाचार का प्रचार करें और उसकी शिक्षा दें। इस प्रकार प्रभु एक सुसमाचार प्रचारक या शिक्षक के द्वारा लोगों पर अपनी इच्छा को प्रगट करता है, और वे जो पाप में खोए हैं उन्हें अपने पास बुलाता है। (मत्ती 11:28-30)।

सर्वप्रथम, हमारा कर्त्तव्य यह है कि हम सुसमाचार का प्रचार करें, और फिर जो सुनकर उसे मानना चाहें उनकी सहायता करें। (मत्ती 28:19, 20)। यही कारण है कि पौलुस एक जगह कहता है: "क्योंकि मसीह ने मुझे बपतिस्मा देने को नहीं, वरन सुसमाचार सुनाने को भेजा है, और यह भी शब्दों के ज्ञान के अनुसार नहीं, ऐसा न हो कि मसीह का क्रूस व्यर्थ ठहरे। क्योंकि क्रूस की कथा नाश होनेवालों के निकट मूर्खता है, परन्तु हम उद्धार पानेवालों के निकट परमेश्वर की सामर्थ है।" (1 कुरिन्थियों 1:17, 18)। वह कह रहा है, उसे केवल बपतिस्मा देने के लिए ही नहीं भेजा गया है। उसका पहिला कर्त्तव्य था सुसमाचार को प्रचार करना, और जो उसे सुनकर मानना चाहते थे स्वाभाविक ही है कि वह उन्हें बपतिस्मा देने को तैयार था।

क्या आपने इससे पहिले कभी प्रभु के सच्चे सुसमाचार को सुना है? यदि नहीं, तो आप अब सुसमाचार की बुलाहट को सुन रहे हैं- अर्थात् मसीह के पास आने के निमन्त्रण को। यदि आप उसकी आज्ञा मानेंगे तो वह आप का उद्धार करेगा।

# सुसमाचार को मानना

क्या मनुष्य सुसमाचार को मान सकता है? कुछ लोग कहते हैं कि ऐसा करना असम्भव है। परन्तु बाइबल इसके विपरीत सिखाती है। सुसमाचार की कुछ बिशेषताएं हैं, जिनके बारे में हमने इससे पहिले देखा है, और हमें चाहिए कि हम उन पर विश्वास करें। किन्तु, फिर सुसमाचार की कुछ आज्ञाएं हैं, जिनके बारे में हम प्रस्तुत पाठ में देखने जा रहे हैं, और हमें चाहिए कि हम उन्हें मानें।

सबसे पहिले, आईए, हम सुसमाचार की प्रमुख विशेषताओं के ऊपर एक बार फिर से विचार करें। 1 कुरिन्थियों 15:1-4 में पौलुस कहता है कि वे विशेषताएं हैं: मसीह की मृत्यु, उसका गाड़ा जाना, और उसका जी उठना। परन्तु सुसमाचार को मानने से इसका क्या सम्बन्ध है? वास्तव में, बहुत अधिक, जैसा कि हम अभी देखने जा रहे हैं। अब सुनिए कि प्रेरित रोम में मसीही लोगों को लिखकर क्या कहता है: "परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, कि तुम जो पाप के दास थे तौभी मन से उस उपदेश के माननेवाले हो गए, जिसके सांचे में ढाले गए थे। और पाप से छुड़ाए जाकर धर्म के दास हो गए।" (रोमियों 6:17, 18)। अब इस बात पर ध्यान दें, कि पहिले वे पाप के दास थे परन्तु फिर वे धर्म के दास बन गए थे। यह बदलाव उनके भीतर किस प्रकार आया? क्योंकि वे "मन से उस उपदेश के माननेवाले हो गए जिस के सांचे में ढाले गए थे।" दूसरे शब्दों में, उन्होंने मसीह के सुसमाचार को माना था। परन्तु सुसमाचार की उन विशेषताओं को वास्तव में वे कैसे मान सकते थे? यहां "उपदेश" का

अभिप्राय मसीह की मृत्यु और गाड़े जाने और पुनरुत्थान से है। परन्तु इस बात पर ध्यान दें, कि उन्होंने उस उपदेश के सांचे में ढाले जाने के द्वारा उसे माना था। और इस प्रकार वे अपने पापों के लिये मर गए थे, और अपने प्रभु के साथ बपतिस्मे के पानी के भीतर गाड़े गए थे, और पानी की उस कब्र में से बाहर निकलकर जी उठे थे। रोमियों की पुस्तक के छठे अध्याय में इसी बात को बड़ी ही स्पष्टता से बताया गया है। यहां हम इस प्रकार पढ़ते हैं: "सो हम क्या कहें? क्या हम पाप करते रहें, कि अनुग्रह बहुत हो? कदापि नहीं। हम जब पाप के लिये मर गए तो फिर आगे को उसमें क्योंकर जीवन बिताएं? क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया? सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें। क्योंकि यदि हम उस की मृत्यु की समानता में उसके साथ जुट गए हैं, तो निश्चय उसके जी उठने की समानता में भी जुट जाएंगे। क्योंकि हम जानते हैं, कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया, ताकि पाप का शरीर व्यर्थ हो जाए, ताकि हम आगे को पाप के दासत्व में न रहें।" (रोमियों 6:1-6)। सो इस तरह से उस उपदेश के सांचे में वे ढाले गए थे जिसे उन्होंने माना था, और जिसका वर्णन बाद में रोमियों 6:17, 18 में पौलुस ने किया था। इसी तरह से जब भी कोई मनुष्य मसीह के सुसमाचार को मानता है, तो वह इसी प्रकार से उस उपदेश के सांचे में ढाला जाता है, अर्थात् इस प्रकार वह प्रभु यीशु को मृत्यु, गाड़े जाने, और उसके पुनरुत्थान को, उसकी आज्ञा मानकर, चित्रित करता है।

किन्तु, अब हम देखना चाहेंगे, कि सुसमाचार की आज्ञाएं क्या हैं, और उनका सम्बन्ध मसीह की मृत्यु, गाड़े जाने, और पुनरुत्थान से क्या है? स्वयं प्रभु यीशु ने अपने चेलों को आज्ञा देकर कहा था, "तुम सारे जगत

में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो। जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु हो विश्वास न करेगा, वह दोषी ठहराया जाएगा।" (मरकुस 16:15, 16)। और मत्ती की पुस्तक में हम इस प्रकार पढ़ते हैं: "इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ: और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं।" (मत्ती 28:19, 20)। अब यहां आप देखेंगे, कि प्रभु आज्ञा देकर कह रहा है कि सुसमाचार का प्रचार किया जाए। और न केवल यही, परन्तु आगे चलकर वह कहता है कि कुछ आवश्यक आज्ञाएं भी हैं जिन्हें मानना प्रत्येक उद्धार पानेवाले के लिये ज़रूरी है। और फिर हम देखते हैं कि प्रभु के आदेशानुसार उसके चेले यरुशलेम नगर में जाकर सुसमाचार का प्रचार करते हैं। (प्रेरितों 2)। सबसे पहिले लोगों को यह विश्वास दिलाने के लिये कि यीशु वास्तव में परमेश्वर का पुत्र है, वे उनके सामने कुछ सबूत या प्रमाण रखते हैं। और जब लोगों ने यह मान लिया, तो लिखा है, उन्होंने चेलों से यह प्रश्न पूछा: "भाइयो हम क्या करें?" (प्रेरितों 2:37)। और तब उन्हें यह दिखाने के लिये, कि उनके करने के लिये कुछ है, पतरस ने उन से कहा, "मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों को क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।" (प्रेरितों 2:38)। इसी प्रकार, प्रेरितों 9 अध्याय में भी हम देखते हैं, कि जब शाऊल पर प्रभु प्रगट हुआ था और उसने प्रभु से जानना चाहा था कि वह उद्धार पाने के लिये क्या करे। तो प्रभु ने उस से कहा था, कि तू नगर के भीतर जा और तुझे बताया जाएगा कि क्या करना है। बाद में हनन्याह उसके पास आया और उसे प्रभु की वही आज्ञा मानने को कहा। अर्थात, उठ, खड़ा हो, और अपने पापों को धो डालने के लिये बपतिस्मा ले। (प्रेरितों 22:16)। फिर प्रेरितों 8 अध्याय में हम देखते हैं, कि फिलिप्पुस

खोजे को मसीह का प्रचार करता है, और लिखा है, कि सुनकर खोजा बपतिस्मा लेना चाहता था। सो क्या होता है? आईए, हम पढ़ें: "फिलिप्पुस ने कहा, यदि तू सारे मन से विश्वास करता है तो हो सकता है: उसने उत्तर दिया मैं विश्वास करता हूं कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है। तब उसने रथ खड़ा करने की आज्ञा दी, और फिलिप्पुस और खोजा दोनों जल में उतर पड़े, और उसने उसे बपतिस्मा दिया। जब वे जल में से निकलकर ऊपर आए तो प्रभु का आत्मा फिलिप्पुस को उठा ले गया, सो खोजे ने उसे फिर न देखा, और वह आनन्द करता हुआ अपने मार्ग चला गया।" (प्रेरितों 8:37-39)। अब, सुसमाचार की क्या आज्ञाएं है? सर्वप्रथम, आवश्यक है कि मनुष्य सुसमाचार को सुने। दूसरे, उसे चाहिए कि वह परमेश्वर में, और मसीह में, कि वह उसका पुत्र है, विश्वास करे। तीसरे, उसे चाहिए कि वह अपने पापों से मन फिराए। चौथे, उसे चाहिए कि वह यीशु मसीह का अपने मुंह से यह कहकर इकरार करे कि वह परमेश्वर का पुत्र है। और पांचवें स्थान पर आता है बपतिस्मा, पानी के भीतर गाड़े जाना, जो कि पापों की क्षमा के लिये लिया जाता है।

सो इन बातों के ऊपर विचार करके हम देखते हैं कि जब कोई मनुष्य सुसमाचार की आज्ञाओं को मानता है, तो वह अपने पापों के लिये मर जाता है। इसका अभिप्राय यह है, कि जब सुसमाचार को सुनकर मनुष्य के मन में प्रभु के प्रति दृढ़ विश्वास उत्पन्न हो जाता है तो वह अपने सारे पापों से मन फिराने को तैयार हो जाता है और उन्हें छोड़ देता है। इस प्रकार, वह पाप के लिये मर जाता है। फिर मृत्यु के बाद स्थान आता है गाड़े जाने का। यह गाड़े जाना जल के भीतर होता है। इस बात को हम पहिले ही देख चुके हैं कि फिलिप्पुस और खोजा दोनों किस प्रकार जल के भीतर जाते हैं ताकि खोजा बपतिस्मे के द्वारा जल के भीतर गाड़ा जाए। इसके अतिरिक्त, कुलुस्सियों 2:12 तथा रोमियों 6:4 से भी हमें पता चलता है कि बपतिस्मे का अभिप्राय जल के भीतर गाड़े जाने से

है। और फिर, गाड़े जाने के पश्चात् स्थान आता है पुनरुत्थान का। प्रेरितों 8 अध्याय के अनुसार, फिलिप्पुस और खोजा दोनों जल में से निकलकर ऊपर आए थे। इसी तरह, रोमियों 6 अध्याय में भी गाड़े जाने और जी उठने का और मसीह की मृत्यु और जी उठने की समानता में जुट जाने का वर्णन हुआ है। सो इस तरह से प्रभु की इन साधारण आज्ञाओं को मानकर मनुष्य व्यक्तिगत रूप से प्रभु यीशु की मृत्यु और गाड़े जाने तथा उसके जी उठने को चित्रित करता है। और इसी प्रकार प्रत्येक वह मनुष्य भी जो मसीह की आज्ञा को मानता है उसकी मृत्यु, और उसके गाड़े जाने और पुनरुत्थान को बपतिस्मा लेने के द्वारा व्यक्त करता है।

यूहन्ना 3:3-5 में प्रभु यीशु ने जल और आत्मा से जन्म लेने की बात कही थी। इसका तात्पर्य भी इसी से है, क्योंकि जब मनुष्य जल के भीतर गाड़ा जाता है और जब वह उसमें से बाहर आता है तो इस प्रकार जल और आत्मा से उसका जन्म होता है, अर्थात् परमेश्वर के आत्मा की बात मानकर वह जल की कब्र के भीतर से जी उठता है। और तब वह नए जीवन की सी चाल चलने लगता है, क्योंकि अब वह मसीह में एक नई सृष्टि हो जाता है। (2 कुरिन्थियों 5:17)।

प्रभु की आज्ञाओं को पालन करना आवश्यक है। और जो लोग प्रभु की आज्ञाओं को मानते हैं उन्हें वैसे ही आशीष भी मिलती है। परन्तु हमें यह याद रखना चाहिए कि सुसमाचार की एक भी आज्ञा को अनावश्यक या महत्वरहित जानकर नहीं छोड़ा जा सकता। जब मनुष्य प्रभु की प्रत्येक आज्ञा का पालन करता है केवल तभी प्रभु उसका उद्धार करता है, और उसे अपनी कलीसिया में मिलाता है, तथा सभी आत्मिक आशीषें और अनन्त जीवन की आशा प्रदान करता है।

सुसमाचार यद्यपि सब के लिये है, और जिनको अपना लेखा देना है आवश्यक है कि वे सब उद्धार पाने के लिये उसे मानें, किन्तु तौभी पौलुस का कहना है, "परन्तु सब ने उस सुसमाचार पर कान न लगाया।"

(रोमियों 10:16)। इस बात से हम देखते हैं, कि न केवल सुसमाचार को माना जा सकता है, परन्तु उद्धार पाने के लिये उसे मानना बड़ा ही आवश्यक है। परन्तु जो नहीं मानते, उनका क्या होगा, उनके बारे में वह कहता है, "और तुम्हें जो क्लेश पाते हो, हमारे साथ चैन दे; उस समय जबकि प्रभु यीशु अपने सामर्थी दूतों के साथ, धधकती हुई आग में स्वर्ग से प्रगट होगा। और जो परमेश्वर को नहीं पहचानते, और हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते उनसे पलटा लेगा। वे प्रभु के सामने से, और उसकी शक्ति के तेज से दूर होकर अनन्त विनाश का दन्ड पाएंगे।" (1 थिस्सलुनीकियों 1:7-9)। सो इसके अनुसार हम देखते हैं, कि चाहे परमेश्वर के विषय में अज्ञानता हो, या चाहे मनुष्य ने सुसमाचार को न माना हो, इन दोनों ही बातों का एक ही सा परिणाम होगा, अर्थात् वे अनन्त विनाश का दन्ड पाएंगे। प्रभु यीशु ने कहा था, कि वे जो सुसमाचार को मानेंगे उनका उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेंगे वे नाश होंगे। (मरकुस 16:16)। इस सब से हम इसी निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि जो लोग अपने उद्धार से निश्चिन्त रहते हैं और उस पर कोई ध्यान नहीं देते हैं वे कदापि नहीं बचेंगे (इब्रानियों 2:2, 3)।

# सुसमाचार को सुनना

मनुष्य जो कुछ सुनता है, उसी के अनुसार उसका विश्वास भी होता है। यदि वह गलत बातें सुनता है तो उसका विश्वास भी गलत बातों पर ही होगा, विशेषकर यदि वह पवित्र शास्त्र में से नहीं ढूंढ़ता और सच्चाई को जानने का प्रयत्न नहीं करता। यदि वह सच्चाई सुनता है, तो बहुत हद तक वह सच्चाई पर ही विश्वास करेगा। इसी कारण, आवश्यक है कि मनुष्य केवल परमेश्वर के वचन को ही सुने। पौलुस कहता है, "सो विश्वास सुनने से, और सुनना मसीह के वचन से होता है।" (रोमियों 10:17)। ध्यान दें इस बात पर कि यहाँ बल सुनने पर दिया जा रहा है, परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि कुछ भी सुन लिया जाए, किन्तु आवश्यक है कि केवल परमेश्वर या मसीह का वचन ही सुना जाए, ताकि फलस्वरूप वास्तविक तथा सच्चा विश्वास उत्पन्न हो।

अब प्रश्न यह उठता है, कि मनुष्य को यह निश्चय कैसे हो कि उसका विश्वास वास्तव में परमेश्वर के वचन पर ही आधारित है? कहा जाता है, और प्रत्यक्ष है, कि आज परमेश्वर और उसकी पुस्तक बाइबल के नाम में बहुतेरी बातें सिखाई जा रही हैं, और इनमें से अनेकों ऐसी हैं जिन्हें बाइबल की शिक्षा करके सिखाया जाता है। इनमें से बहुतेरी परस्पर विरोधी भी हैं। और इसी कारण फूट है और लोगों को समझ में नहीं आता कि क्या मानें और क्या न मानें। सो मनुष्य को कैसे यह निश्चय हो सकता है कि जो कुछ उसने सुना है वह वास्तव में सच है? सबसे अच्छा उपाय यही है, कि इसका निश्चय करने के लिए स्वयं बाइबल से ही देखा जाए।

किसी भी व्यक्ति को किसी मनुष्य के प्रचार या शिक्षा को कभी भी अंतिम सच नहीं मान लेना चाहिए, चाहे उस मनुष्य के प्रति उसके मन में कितना भी अधिक प्रेम वा आदर क्यों न हो। हमारी आत्माएं इतनी अधिक मूल्यवान हैं और अनन्तकाल इतना अधिक बड़ा है कि इसे ध्यान में रखकर हम किसी भी मनुष्य के वचन को अपने विश्वास तथा उद्धार का आधार नहीं बना सकते। इसके विपरीत, सच्चाई को जानने के लिए, हमें पवित्र बाइबल के पास आना चाहिए जो कि सच्चाई को जानने का एकमात्र साधन है। और जबकि हम ऐसा करते हैं, तो हमें चाहिए कि हम उसे पढ़ें, उस पर ध्यान दें, और यह जानने के लिए कि क्या हम वास्तव में सही मार्ग पर ही हैं, हमें चाहिए कि हम पवित्र शास्त्र में से ढूंढें। और यदि हम देखते हैं कि हम सही मार्ग पर नहीं हैं तो हम अपने आप को उसके अनुसार ठीक कर सकते हैं।

एक स्थान पर प्रभु यीशु ने कहा था, "तुम पवित्र शास्त्र में ढूंढ़ते हो, क्योंकि समझते हो कि उस में अनन्त जीवन तुम्हें मिलता है, और यह वही है, जो मेरी गवाही देता है।" (यूहन्ना 5:39)। फिर हम बिरीया के लोगों के बारे में, जिन्होंने पौलुस के प्रचार को सुना था, यूँ पढ़ते हैं: "ये लोग तो थिस्सलुनीके के यहूदियों से भले थे और उन्होंने बड़ी लालसा से वचन ग्रहण किया, और प्रतिदिन पवित्र शास्त्रों में से ढूंढ़ते रहे कि ये बातें यों ही हैं, या नहीं।" (प्रेरितों 17:11)। अब इस बात पर विचार करें! यहाँ कुछ लोग थे जो कि प्रेरित पौलुस के प्रचार को सुनने के बाद भी परमेश्वर के वचन में से देख रहे थे यह निश्चय करने के लिए कि क्या वह वास्तव में सत्य का ही प्रचार कर रहा है। सो यदि पौलुस के प्रचार को सुनकर उस समय के लोग उसकी बातों को परखने के लिए पवित्र शास्त्र में से ढूंढ़ते थे, तो कितना अधिक आज हमें भी आजकल के प्रचारकों के वचन को सुनकर ऐसा ही करना चाहिए। क्या यह वास्तव में अच्छा न होगा यदि

हम में से प्रत्येक जन ऐसा ही करे? और यदि वास्तव में ऐसा हो, तो कठिनता से ही कहीं कोई धार्मिक विषयों पर गलती होगी, और इस में भी कोई सन्देह नहीं कि झूठे शिक्षकों की संख्या में भी भारी कमी हो जाएगी।

पौलुस ने तीमुथियुस नाम के एक नव-युवक प्रचारक से परमेश्वर के वचन का अध्ययन करने का आग्रह करके एक जगह उस से यूं कहा था, "अपने आप को परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करनेवाला ठहराने का प्रयत्न कर जो लज्जित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो।" (2 तीमुथियुस 2:15)। क्यों ऐसा है, कि बहुत से लोग आज परमेश्वर के वचन से अज्ञान हैं? क्योंकि उन्होंने पवित्र शास्त्र को पढ़कर स्वयं उसका अध्ययन नहीं किया है। आज क्यों बहुतेरे लोग धार्मिक कहलाते हुए भी धोखे में हैं? इसका भी यही कारण है, क्योंकि उन्होंने सच्चाई और झूठ में अन्तर देखने के लिये भी ठीक से नहीं पढ़ा है। फिर, क्यों आज बहुतेरे लोग मूसा के पुराने नियम और मसीह के नए नियम के बारे में उलझन में हैं? अर्थात् उन्हें ठीक से नहीं समझते? यह भी इसी कारण से है- न वे पढ़ते हैं और न उन्होंने कभी अध्ययन किया है, और इसलिये वे सत्य के वचन को समझने और उसे ठीक रीति से काम में लाने में असमर्थ हैं। मेरे मित्रो, जबकि प्रेरित पौलुस सुसमाचार के एक प्रचारक से परमेश्वर के वचन को अध्ययन करने का आग्रह कर रहा है, सो क्या आज आप को और मुझे भी ऐसा ही करने की आवश्यकता नहीं है?

प्रेरित यूहन्ना ने उन दिनों में मसीही लोगों को उपदेश देकर एक जगह कहा था, कि "हे प्रियो, हर एक आत्मा की प्रतीति न करो: बरन आत्माओं को परखो, कि वे परमेश्वर की ओर से हैं कि नहीं; क्योंकि बहुत से झूठे भविष्यद्वक्ता जगत में निकल खड़े हुए हैं।" (1 यूहन्ना 4:1)। यहां परमेश्वर के लोगों से प्रेरित निवेदन करके कह रहा है, कि वे

प्रत्येक आत्मा या प्रत्येक प्रचारक के वचन पर विश्वास न करें, इसलिये, क्योंकि बहुतेरे झूठे भविष्यद्वक्ता या झूठे प्रचारक जगत में विद्यमान हैं। परन्तु हम कैसे जान सकते हैं कि कौन वास्तव में सच्चा है और कौन झूठा है? सो वह सलाह देकर आगे कहता है, कि हम उन्हें परखें। ऐसा हम किस प्रकार कर सकते हैं? उनके प्रचार और शिक्षा की तुलना परमेश्वर के वचन के साथ करके। यदि हम ऐसा वास्तव में करने लगें तो हम बड़ी ही आसानी से बता सकते हैं कि आज कौन सच्चाई को प्रचार कर रहा है और कौन नहीं। जब फिलिप्पुस खोजे के साथ उसके रथ में जाकर बैठा था तो उसने देखा था कि खोजा पवित्र शास्त्र में से पढ़ रहा था, और लिखा है, "तब फिलिप्पुस ने अपना मुंह खोला, और इसी शास्त्र से आरम्भ करके उसे यीशु का सुसमाचार सुनाया।" (प्रेरितों 8:35)। परिणाम स्वरूप उसके मन में सच्चा विश्वास उत्पन्न हुआ था और उसने प्रभु की आज्ञा का पालन किया था। प्रेरितों 8:5 में हम देखते हैं, कि फिलिप्पुस सामरिया में जाता है और वहाँ उसने लोगों को मसीह का प्रचार किया। फिर जब पतरस और यूहन्ना वहां गए, तो लिखा है, कि उन्होंने प्रभु का वचन सुनाया और तब यरुशलेम को लौट गए। (प्रेरितों 8:25)। यहां इस बात पर ध्यान दें, कि उनके प्रचार का बल या आधार मसीह और पमरेश्वर का वचन था।

दो प्रकार से हम सुसमाचार को सुन सकते हैं। सबसे पहिले, जैसा कि पहिले हम देख चुके हैं, हम स्वयं परमेश्वर के वचन का अध्ययन कर सकते हैं। इस प्रकार हम परमेश्वर की प्रेरणा द्वारा लिखे गए उसके वचन के पृष्ठों को पढ़कर मसीह, पौलुस, और पतरस, इत्यादि परमेश्वर के जनों को सुन सकते हैं। परन्तु उन्नति तथा प्रगति के इस युग में भी, बहुतेरे लोग आज ऐसे हैं जो स्वयं नहीं पढ़ सकते, और इसका अर्थ यह है कि वे केवल अन्य लोगों के द्वारा ही प्रभु के वचन को सुन सकते हैं। ऐसी

परिस्थिति में दो जन आमने-सामने होते हैं, अर्थात् एक तो प्रचारक और दूसरा सुननेवाला। इसे ध्यान में रखकर, उस व्यक्ति के ऊपर एक बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी होती है जो परमेश्वर के वचन को सुनाने का काम करता है। उसे परमेश्वर के वचन की पुस्तक के प्रति वफ़ादार होना चाहिए। यदि वह परमेश्वर के वचन को लापरवाही या धोखे के साथ काम में लाता है और इस प्रकार किसी जन को अनुचित मार्ग पर ले जाता है तो उसे परिणाम का सामना करना पड़ेगा। पौलुस एक जगह इसलिये चिताकर कहता है, कि जो लोग फूट डालने और ठोकर खाने के कारण होते हैं उन्हें ताड़ लिया करो; और उनसे दूर रहो, क्योंकि वे चिकनी चुपड़ी बातों से सीधे सादे मन के लोगों को बहका देते हैं। (रोमियों 16:17, 18)। फिर, सुननेवाले की यह ज़िम्मेदारी होती है कि वह उसे ग्रहण करने से पहिले इस बात का निश्चय करे कि जो कुछ उसने सुना है वह वास्तव में सच है। जो लोग परमेश्वर के वचन को पढ़ सकते हैं उनके लिये तो कोई विशेष कठिनाई नहीं हैं क्योंकि वे स्वयं पवित्र शास्त्र में से ढूंढ़ सकते हैं। परन्तु जो लोग स्वयं नहीं पढ़ सकते उनके निकट वास्तव में एक समस्या आ जाती है। वे क्या कर सकते हैं? यह जानने के लिये कि वे वास्तव में सच ही सुन रहे हैं, उन्हें चाहिए कि वे किसी को कहें कि वह उन्हें परमेश्वर के वचन की पुस्तक में से ही पढ़कर सुनाए। निसंदेह, यदि कोई वास्तव में सच्चाई जानना चाहता है, तो सच्चाई को जानने का मार्ग भी है।

यह बात बड़ी ही महत्वपूर्ण है कि प्रत्येक मनुष्य उसी सुसमाचार को सुने जिसे प्रचार करने की आज्ञा देकर प्रभु ने प्रेरितों को भेजा था कि उसका प्रचार सारे जगत में और सारे लोगों के बीच में किया जाए। (मरकुस 16:15)। फिर, एक अन्य स्थान पर लिखा है, कि वे जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाएं, अर्थात् उन्हें शिक्षा दें। (मत्ती 28:19)। परन्तु किस लिये? ताकि सारा जगत सुसमाचार को सुनकर उसमें विश्वास

लाए, और उसे माने, और इस रीति से उद्धार पाए। पौलुस एक जगह तीमुथियुस को लिखकर कहता है, "इन बातों पर स्थिर रह, क्योंकि यदि ऐसा करता रहेगा, तो तू अपने, और अपने सुननेवालों के लिये भी उद्धार का कारण होगा। (1 तीमुथियुस 4:16)। सुनने के द्वारा किस प्रकार किसी का उद्धार हो सकता है? जैसा कि पूर्व कहा जा चुका है, विश्वास सुनने से आता है, और सुनकर विश्वास होता है और विश्वास से प्रेरणा पाकर हम प्रभु की आज्ञा मानते हैं, और आज्ञा मानने के द्वारा उद्धार मिलता है। पौलुस के कहने का ठीक यही अभिप्राय है।

प्रेरितों के कामों की पुस्तक में मिलनेवाले मन-परिवर्तन, अर्थात् उद्धार पानेवाले लोगों के उदाहरणों को यदि आप पढ़ेंगे तो आप देखेंगे कि हर एक स्थान पर एक सुसमाचार प्रचारक उपस्थित था। उसका क्या काम था? उसका काम था उन्हें सुसमाचार सुनाना जिन्हें उद्धार की आवश्यकता थी। इस कारण, जब उन्होंने सुसमाचार सुना तथा उस पर विश्वास किया और उसे माना, तो इस प्रकार उनका उद्धार हुआ। परन्तु यदि वे लोग परमेश्वर का वचन न सुन पाते, तब क्या होता? तो प्रत्यक्ष ही है कि उनका उद्धार नहीं होता, क्योंकि विश्वास केवल परमेश्वर के वचन को सुनने से ही होता है, और विश्वास बिना परमेश्वर को प्रसन्न करना अनहोना है। (इब्रानियों 11:6)।

अपने पुत्र यीशु के रूपान्तर के समय परमेश्वर ने कहा था, "कि यह मेरा पुत्र है, जिस से मैं प्रसन्न हूं: इसकी सुनो।" (मत्ती 17:5)। फिर, हम पढ़ते हैं कि आज किस प्रकार परमेश्वर अपने पुत्र यीशु के द्वारा मनुष्य से बोलता है (इब्रानियों 1:1, 2)। और फिर हम यह भी पढ़ते हैं कि एक जगह मसीह को वचन कहकर सम्बोधित किया गया है। (यूहन्ना 1:1, 2)। इसलिए यह बड़ा ही आवश्यक है कि हम मसीह की सुनें और उसकी मानें, जो हमें बचाने के लिये आया था। मनुष्य जो कुछ कहता है

हमें उसे भूल जाना चाहिए। उसकी सलाह, विचार और शिक्षा, इत्यादि प्रभु के वचन के सामने बिल्कुल व्यर्थ हैं। हमें मसीह को सुनना है। हमें मसीह पर विश्वास लाना है। और हमें मसीह की आज्ञा को मानना है।

सो याकूब इस प्रकार कहता है, "परन्तु वचन पर चलनेवाले बनो, और केवल सुननेवाले ही नहीं जो अपने आप को धोखा देते है।" (याकूब 1:22)। जबकि यह बड़ा ही आवश्यक है कि हम वास्तव में परमेश्वर के वचन को ही सुनें, इसी के साथ यह भी सम्भव है कि यदि हम वहीं रुक जाएं तो हम नाश भी हो सकतें हैं। जब तक हम सत्य को मानेंगे नहीं, वह हमें नहीं बचाएगा। यही कारण है कि हम से कहा गया है, कि हम वचन को केवल सुननेवाले ही नहीं परन्तु उस पर चलनेवाले बनें। इस बात को याद रखना हमारे लिये बड़ा ही आवश्यक तथा भला है।

# परमेश्वर में विश्वास

इब्रानियों की पत्री का लेखक हमें यूं बताता है, "अब विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय, और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है।" (इब्रानियों 11:1)। विश्वास का अर्थ है, ऐतबार, भरोसा, स्वीकृति, जिसके फल-स्वरूप या आधार पर मनुष्य कुछ मानता या करता है। यह एक ऐसी नेव है जिसके आधार पर मनुष्य एक मसीही बनता है, और विश्वास ही के कारण वह एक मसीही बना रहता है।

इब्रानियों की पत्री का लेखक फिर कहता है, "और विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना है, क्योंकि परमेश्वर के पास आनेवाले को विश्वास करना चाहिए, कि वह है, और अपने खोजनेवालों को प्रतिफल देता है।" (इब्रानियों 11:6)। इस पर ध्यान दें, कि यहाँ दो बातें परमेश्वर में विश्वास करने के सम्बन्ध में प्रमुख हैं। पहिले, मनुष्य को चाहिए कि वह यह विश्वास करे कि वह, अर्थात परमेश्वर है। दूसरे, उसे विश्वास करना चाहिए कि परमेश्वर अपने खोजनेवालों को प्रतिफल देता है।

जब हम अपने चारों ओर सृष्टि को देखते हैं, तो यह कैसे हो सकता है कि इन सब वस्तुओं को देखते हुए भी हम यह विश्वास न करें कि स्वर्ग में एक परमेश्वर विद्यमान है? हम आकाश, पृथ्वी, पशुओं और मनुष्यों इत्यादि को देखते हैं, और ये सब वस्तुएं एक सृष्टिकर्त्ता के होने का प्रमाण है। दाऊद कहता है, "आकाश ईश्वर की महिमा वर्णन कर रहा है; और आकाशमन्डल उसकी हस्तकला को प्रगट कर रहा है।" (भजन. 19:1)। केवल एक मूर्ख ही परमेश्वर की उपस्थिति को अस्वीकार करेगा। (भजन. 14:1)।

परन्तु केवल इतना ही विश्वास कर लेना कि एक परमेश्वर है, बहुत नहीं है। हमें यह भी विश्वास करना चाहिए कि यीशु मसीह उसका पुत्र है। स्वयं यीशु ने कहा था कि, "तुम्हारा मन व्याकुल न हो, तुम परमेश्वर पर विश्वास रखते हो मुझ पर भी विश्वास रखो।" (यूहन्ना 14:1)। बाइबल में इसी प्रकार कई और स्थानों पर भी हमें मिलता है। उदाहरणार्थ, "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।" (यूहन्ना 3:16)। फिर, "यीशु ने पुकारकर कहा, जो मुझ पर विश्वास करता है, वह मुझ पर नहीं, बरन मेरे भेजनेवाले पर विश्वास करता है।" (यूहन्ना 12:44)।

किन्तु उनके विषय में हम क्या देखते हैं जो मसीह में विश्वास नहीं रखते? पवित्र शास्त्र ऐसे लोगों के बारे में भी हमें बताता है। यीशु ने कहा था, "जो उस पर विश्वास करता है, उस पर दंड की आज्ञा नहीं होती, परन्तु जो उस पर विश्वास नहीं करता, वह दोषी ठहर चुका; इसलिये कि उसने परमेश्वर के एकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया।" (यूहन्ना 3:18)। फिर, "जो पुत्र पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है; परन्तु जो पुत्र की नहीं मानता, वह जीवन को नहीं देखेगा, परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर रहता है।" (यूहन्ना 3:36)। "इसलिये मैंने तुम से कहा, कि तुम अपने पापों में मरोगे, क्योंकि यदि तुम विश्वास न करोगे कि मैं वही हूं, तो अपने पापों में मरोगे।" (यूहन्ना 8:24)।

सो, पवित्र शास्त्र की इन बातों से हम देख सकते हैं कि वे लोग जो प्रभु में विश्वास लाते हैं वे कितनी आशीष पाते हैं, किन्तु हम यह भी देखेते हैं, कि जो लोग उस पर विश्वास नहीं लाते उन्हें कितने भारी श्राप, विपत्ति, और दण्ड का सामना करना पड़ेगा।

परन्तु हमें कहां तक या किस प्रकार परमेश्वर में और मसीह में, कि वह परमेश्वर का पुत्र है, विश्वास करना चाहिए? कदाचित हम

मानसिक रूप से उन्हें मान लें, परन्तु क्या यह पर्याप्त होगा? परमेश्वर के वचन के अनुसार हम देखते हैं कि हमें अपने विश्वास को व्यक्त भी करना है या उसे प्रमाणित भी करना है। यीशु ने, उदाहरण के लिये, एक जगह कहा था, "जब तुम मेरा कहना नहीं मानते, तो क्यों मुझे हे प्रभु, हे प्रभु कहते हो?" (लूका 6:46)। फिर, एक अन्य स्थान पर उसने कहा था, "जो मुझ से, हे प्रभु, हे प्रभु, कहता है, उन में से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है। उस दिन बहुतेरे मुझ से कहेंगे, हे प्रभु, हे प्रभु, क्या हमने तेरे नाम से भविष्यद्वाणी नहीं की, और तेरे नाम से दुष्ट-आत्माओं को नहीं निकाला, और तेरे नाम से बहुत अचम्भे के काम नहीं किए? तब मैं उन से खुलकर कह दूंगा कि मैंने तुम को कभी नहीं जाना, हे कुकर्म करनेवालो, मेरे पास से चले जाओ।" (मत्ती 7:21-23)। यहां हम देखते हैं, कि ये लोग विश्वासी थे, और फिर यह, कि वे धार्मिक कामों में लगे हुए थे। तो फिर उन में क्या गलती थी? वे स्वर्गीय पिता की इच्छानुसार नहीं चल रहे थे।

प्रभु में हमारा विश्वास इस प्रकार का होना चाहिए कि जो कुछ वह हमें करने को कहता है हम उसे करें। इसीलिये हमें बताया गया है कि हमारा उद्धार केवल विश्वास ही से नहीं हो सकता, क्योंकि कामों के बिना विश्वास मरा हुआ है। याकूब लिखकर कहता है, "वैसे ही विश्वास भी, यदि कर्म सहित न हो तो अपने स्वभाव में मरा हुआ है।" (याकूब 2:17)। और फिर, "सो तुमने देख लिया कि मनुष्य केवल विश्वास से ही नहीं, वरन कर्मों से भी धर्मी ठहरता है।" (याकूब 2:24)। और अंत में वह कहता है, "निदान, जैसे देह आत्मा बिना मरी हुई है वैसे ही विश्वास भी कर्म बिना मरा हुआ है।" (याकूब 2:26)। इन स्थानों से पढ़कर हम देखते हैं, कि लेखक हमारा ध्यान इस बात पर दिला रहा है कि उद्धार पाने के लिये केवल विश्वास करना ही पर्याप्त नहीं है। और इस

बात को वह अनेक उदाहरणों के द्वारा प्रमाणित भी करता है, जैसा कि याकूब 2 अध्याय को पढ़कर देखा जा सकता है।

कभी-कभी "केवल विश्वास" के ही द्वारा उद्धार का प्रचार करनेवाले और शिक्षा देनेवाले लोग अपनी बात को प्रमाणित करने के लिये यूहन्ना 3:16 का वर्णन करते हैं। किन्तु, मसीह ने यहां ऐसा नहीं कहा था, कि केवल विश्वास ही से मनुष्य का उद्धार होगा। इसके विपरीत, वह हमें दिखाता है कि यदि हम उसमें विश्वास करेंगे तो हम नाश न होंगे परन्तु अनन्त जीवन पाएंगे। परन्तु प्रश्न यह है कि, यदि कोई व्यक्ति परमेश्वर और उसके वचन में वास्तव में विश्वास रखता है तो वह क्या करेगा? निसंदेह, वह प्रभु की आज्ञा मानेगा। और इस बात का यही अभिप्राय है।

यह तो ठीक है, कि हम विश्वास से धर्मी ठहराए जाते हैं (रोमियों 5:1), परन्तु केवल विश्वास ही के द्वारा नहीं। हम अनुग्रह से विश्वास के द्वारा उद्धार पाते हैं (इफिसियों 2:8, 9)। परन्तु केवल विश्वास से नहीं। प्रत्यक्ष है कि कोई तर्क करके यह कहना न चाहेगा कि मनुष्य का उद्धार पश्चाताप करने, और बपतिस्मा लेने, तथा मसीही जीवन व्यतीत करने, इत्यादि, के बिना हो सकता है, किन्तु तौभी एक ऐसा व्यक्ति जो केवल विश्वास ही के द्वारा उद्धार प्राप्त करने की शिक्षा देता है वह इसी प्रकार की परिस्थिति में फंस जाएगा। वास्तव में इस विषय में प्रमुख बात यह है, कि विश्वास का आपके निकट क्या अर्थ है? जिस प्रकार के विश्वास का वर्णन बाइबल में हुआ है, वह एक कार्यशील, जीवित, काम करनेवाला, तथा आज्ञा माननेवाला विश्वास है। बाइबल में एक जगह हम उन लोगों के बारे में पढ़ते हैं जिनके विश्वास को यीशु ने उस समय अनुभव किया था, जब वे एक बीमार को उसके पास चंगाई दिलवाने के लिए लाए थे। (मत्ती 9:2)। अपने विश्वास के विषय में हमारी बातें सुनते रहने के विपरीत वह हमारे विश्वास को देखना चाहता है। वह चाहता है कि हम कामों के द्वारा और उसकी आज्ञाओं को मानने के द्वारा अपने विश्वास को दिखाएं या

प्रमाणित करें। किन्तु यदि हम ऐसा नहीं करते तो प्रत्यक्ष में हमारा विश्वास मरा हुआ तथा व्यर्थ है।

विश्वास लाना मसीह के सुसमाचार की एक आज्ञा है। और विश्वास परमेश्वर के वचन को सुनने से आता है। (रोमियों 10:17)। ऐसा विश्वास मनुष्य को प्रोत्साहित करता है और उसकी अगुवाई करता है, कि वह अपने पापों से मन फिराए और मसीह को परमेश्वर का पुत्र ग्रहण करे और अपने पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा ले। अपने अगले कुछ पाठों में हम इनमें से प्रत्येक के विषय में भी देखने जा रहे हैं। परन्तु इस प्रकार के विश्वास के बिना इन आज्ञाओं को नहीं माना जा सकता। यदि विश्वास वास्तव में सच्चा है। तो वह अवश्य ही आज्ञाओं को मानेगा। वह प्रभु की आज्ञाओं के विषय में संदेह या प्रश्न नहीं करेगा, परन्तु उन्हें बिना तर्क किए मानेगा। वह उसकी शिक्षा को तुच्छ न समझेगा परन्तु उस पर चलेगा।

प्रभु यीशु ने कहा था, "जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।" (मरकुस 16:16) प्रत्यक्ष ही है, कि यदि कोई मनुष्य प्रभु पर विश्वास नहीं करता है, तो वह उसकी आज्ञा को भी नहीं मानेगा। किन्तु यदि वह उसमें वास्तव में विश्वास करता है तो वह उसकी आज्ञा भी मानेगा, अर्थात् वह बपतिस्मा लेगा। क्या यह साधारण सी बात नहीं है? इसके अतिरिक्त, हम देखते हैं, प्रेरितों के कामों की पुस्तक में लिखी मन परिवर्तन की प्रत्येक घटना से, कि पाप से उद्धार प्राप्त करनेवाले प्रत्येक मनुष्य के पास सबसे पलिहे एक प्रचारक आया था। उसके द्वारा सुसमाचार सुनकर वह विश्वास लाता है, अपने पापों से मन फिराता है, मसीह का अंगीकार करता है, और अपने पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लेता है। ऐसा क्यों हुआ था? इसलिए, क्योंकि जब कोई मनुष्य सुसमाचार को सुनकर उसमें विश्वास ले आता है, तो फिर प्रभु की आज्ञाओं को मानने में उसे कोई कठिनाई प्रतीत नहीं होती। सो हम देखते हैं कि इन सब बातों का आधार

केवल एक इसी बात पर है कि मनुष्य उसमें वास्तव में विश्वास करता है या नहीं।

प्रेरितों के कामों की पुस्तक के दूसरे-अध्याय में हमें लोगों की एक भीड़ के बारे में मिलता है। इस समूह में कुछ ऐसे लोग भी शामिल थे जिन्होंने स्वयं मसीह को क्रूस पर चढ़वाने में भाग लिया था। किन्तु जब पतरस तथा अन्य प्रेरितों ने उन्हें सुसमाचार सुनाया था, और उन पर प्रकट किया था कि यीशु वास्तव में परमेश्वर का पुत्र है, और जब उन्होंने उसे मान लिया था तो उन्होंने उनसे प्रश्न पूछा था कि अब "हम क्या करें?" (प्रेरितों 2:37)। अर्थात्, यह इस बात का संकेत था कि अब वे अपने विश्वास को उसकी आज्ञा मानकर प्रकट में दिखाने के लिए तैयार थे, और ऐसा ही उनमें से लगभग तीन हज़ार लोगों ने किया भी था। (प्रेरितों 2:41)। फिर हम पढ़ते हैं, कि जब फिलिप्पुस ने सामरिया में जाकर प्रभु के सुसमाचार का प्रचार किया था, तो उनमें से बहुतेरों ने उस पर विश्वास किया था और बपतिस्मा लिया था। (प्रेरितों 8:12)। इसी प्रकार, जब उसने खोजे को मसीह का सुसमाचार सुनाया था तो वह उस पर विश्वास लाया था और जब फिलिप्पुस ने उसे बताया था, कि अब उसे क्या करना चाहिए, तो लिखा है, कि उसने तुरन्त उसे माना था, और तद्पश्चात् आनन्द करता हुआ वह अपने मार्ग को चला गया था। (प्रेरितों 8:26-39)। फिर, प्रेरितों के कामों की पुस्तक के सोलह अध्याय में हमें पौलुस और सीलास के बारे में यूं मिलता है, कि वे एक दारोगा को कहते हैं कि उद्धार पाने के लिये तू प्रभु में विश्वास ला। वह एक अविश्वासी था। सो हम पढ़ते हैं कि वे उस दारोगा के घर में जाकर उसे तथा उसके घर के लोगों को प्रभु का वचन सुनाते हैं, ताकि वे प्रभु में विश्वास लाएं। तब लिखा है, कि परिणाम स्वरूप उस दारोगा ने रात को उसी घड़ी उनके घाव धोए, अर्थात् इस प्रकार उसने पश्चात्ताप किया, और तुरन्त अपने सब लोगों समेत बपतिस्मा लिया। (प्रेरितों 16:30-33)। ठीक ऐसी ही बात हमें उन सब

लोगों के बारे में भी बाइबल में मिलती है जिन्होंने अपने पापों से उद्धार पाया था।

विश्वास के ही सम्बन्ध में, एक अंतिम बात हम यह देखते हैं, कि पवित्रशास्त्र हमें बताता है कि विश्वास केवल एक ही है। (इफिसियों 4:5)। बाइबल भी केवल एक ही है, और जब हम उसे स्वीकार करेंगे तथा केवल उसी पर विश्वास करेंगे, तो हम सबका एक ही विश्वास होगा, और क्योंकि हमारा एक ही विश्वास होगा इसलिये उसकी अगुवाई में हम सब एक ही समान काम भी करेंगे, अर्थात् हम सब प्रभु की आज्ञा मानेंगे और उसके प्रति विश्वासी बने रहेंगे।

# पापों से मन फिराना

मन फिराना सुसमाचार की एक और आज्ञा है। परन्तु मन फिराने से क्या अर्थ है, और मसीह की मृत्यु, गाड़े जाने, तथा जी उठने से इसका क्या सम्बन्ध है? सर्वप्रथम तो हम यह देखते हैं, कि मन फिराने का अर्थ मुड़कर एक दूसरी दिशा में चलने, परिवर्तन, और अनुचित वस्तुओं या कामों को छोड़ देने से है। एक बार प्रभु यीशु ने एक दृष्टान्त दिया था जिस से इस बात को हम ठीक से समझ सकते हैं। उसने कहा था, "तुम क्या समझते हो? किसी मनुष्य के दो पुत्र थे, उसने पहिले के पास जाकर कहा, हे पुत्र, आज दाख की बारी में काम कर। उसने उत्तर दिया, मैं नहीं जाऊंगा, परन्तु पीछे पछताकर गया। फिर दूसरे के पास जाकर ऐसा ही कहा, उसने उत्तर दिया, जी हां, जाता हूं, परन्तु नहीं गया। इन दोनों में से किसने पिता की इच्छा पूरी की? उन्होंने कहा, पहिले ने; यीशु ने उनसे कहा, मैं तुमसे सच कहता हूं, कि महसूल लेनेवाले और वैश्या तुमसे पहले परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करते हैं। क्योंकि यूहन्ना धर्म के मार्ग से तुम्हारे पास आया, और तुमने उसकी प्रतीति न की पर महसूल लेनेवालों और वेश्याओं ने उसकी प्रतीति की: और तुम यह देखकर पीछे भी न पछताए कि उसकी प्रतीति कर लेते।" (मत्ती 21:28-32)। जहां तक मसीह की मृत्यु, गाड़े जाने, तथा पुनरुत्थान से इसका सम्बन्ध है, जब कोई मनुष्य अपने पापों से फिरता है तो यह प्रभु की मृत्यु का प्रतीक है। सो, इन दोनों ही बातों से, हम देख सकते हैं कि मन फिराना क्यों इतना अधिक आवश्यक है।

यह जानते हुए कि मनुष्य पापी है (रोमियों 3:23), और पाप की

मजदूरी मृत्यु है (रोमियों 6:23), मसीह ने कहा था, कि यदि मनुष्य मन नहीं फिराएगा तो वह अपने पापों में नाश होगा। (लूका 13:3)। इसके अत्याधिक महत्त्व को दिखाने के लिये, लूका 13:5 में प्रभु ने फिर से इसी बात को दोहराया था, दूसरे शब्दों में, वह कह रहा था कि यदि कोई मन नहीं फिराता है, या उस बात से नहीं फिरता है, जो उसे नाश कर सकती है तो वह अवश्य ही नाश होगा। फिर, प्रभु ने कहा था, "मैं तुमसे कहता हूं, कि इसी रीति से एक मन फिरानेवाले पापी के विषय में भी स्वर्ग में इतना ही आनन्द होगा, जितना कि निन्नावें ऐसे धर्मियों के विषय में नहीं होता जिन्हें मन फिराने की आवश्यकता नहीं।" (लूका 15:7)।

किन्तु, इस बात का हमें अवश्य ध्यान रहना चाहिए कि मन फिराने का अर्थ केवल अपने पापों के प्रति दुखी या शोकित होने से ही नहीं है। कोई व्यक्ति कदाचित इस बात के कारण दुखी हो सकता है कि कोई गलत काम करने के कारण वह पकड़ा जाए तथा जेल में जाए। किन्तु उसे इस बात के प्रति कोई दुख न हो कि उसने क्या काम किया है, परन्तु केवल इसलिए क्योंकि परिणाम स्वरूप उसे दुख भोगना पड़ रहा है। यह कदापि मन फिराव नहीं है। प्रेरित पौलुस हमें बताता है, "क्योंकि परमेश्वर भक्ति का शोक ऐसा पश्चाताप उत्पन्न करता है जिसका परिणाम उद्धार है और फिर उससे पछताना नहीं पड़ता: परन्तु संसारी शोक मृत्यु उत्पन्न करता है।" (2 कुरिन्थियों 7:10)। परमेश्वर-भक्ति के शोक के फलस्वरूप पश्चाताप उत्पन्न होता है। परन्तु, स्वयं परमेश्वर-भक्ति का शोक पश्चाताप नहीं है।

पश्चाताप किसे करना है? जब पौलुस अरियुपगुस के बीच में खड़ा होकर प्रचार कर रहा था, तो अपने वक्तव्य के अन्त में उसने इस प्रकार कहा था, "इसलिए परमेश्वर अज्ञानता के समयों से आनाकानी करके, अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है।" (प्रेरितों 17:30)। सो इसके अनुसार हम देखते हैं, कि प्रभु चाहता है कि हर एक स्थान पर सब मनुष्य पश्चात्ताप करें या अपने-अपने पापों से मन फिराएं।

फिर, इस बात पर भी हम ध्यान दें कि पूर्व समय में हमारी अज्ञानता के कारण कुछ बातों की ओर प्रभु ने कदाचित कोई ध्यान न दिया हो, परन्तु वह स्पष्ट करके कहता है कि अब वह कदापि किसी पाप को सहन न करेगा चाहे वह अज्ञानता के कारण ही क्यों न हो। फिर, एक अन्य स्थान पर प्रेरित पतरस इस प्रकार कहता है, "प्रभु अपनी प्रतिज्ञा के विषय में देर नहीं करता, जैसी देर कितने लोग समझते हैं, पर तुम्हारे विषय में धीरज धरता है, और नहीं चाहता, कि कोई नाश हो, वरन यह कि सबको मन फिराव का अवसर मिले।" (2 पतरस 3:9)।

सो जबकि पवित्र शास्त्र हमें बताता है, कि सबको मन फिराने की आवश्यकता है, स्वभाविक ही है कि यहां तात्पर्य ऐसे लोगों से है जो समझदार हैं, या जिन्होंने पाप किया है। उनमें नन्हें छोटे बालक शामिल नहीं है, क्योंकि स्वर्ग का राज्य ऐसों ही का है। (मत्ती 18:1-3)। वास्तव में सच्चाई यह है कि सुसमाचार उन लोगों के लिए दिया गया है जो स्वयं अपने पापों से मन फिरा सकते हैं, और इसका अभिप्राय यह है कि वे अपने बुरे कामों से परिचित हैं और उनसे फिरना चाहते हैं। ऐसा केवल वे ही कर सकते हैं जो बड़े और समझदार हैं तथा अपना लेखा देने के योग्य हैं।

अब जबकि हम प्रेरितों के कामों की पुस्तक के दूसरे अध्याय में से देखते हैं तो हमें यह मिलता है कि पतरस तथा अन्य प्रेरित पिन्तेकुस्त के दिन लोगों को प्रचार करते हैं। वे यहां उन लोगों को प्रचार कर रहे थे जो पापी थे, जिन्होंने मसीह को क्रूस पर चढ़ाने में भी भाग लिया था। सो जब वे लोग जानना चाहते थे, कि अब उन्हें क्या करना चाहिए, तो स्वाभाविक ही है कि पतरस उनसे यह कहता, और उसने यही कहा भी कि, "मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले, तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।" (प्रेरितों 2:38)। इसके बाद, एक अन्य, स्थान पर अपने प्रचार में उसने कहा था, "इसलिए, मन फिराओ और लौट आओ कि तुम्हारे पाप मिटाए

जाएं, जिससे प्रभु के सम्मुख से विश्रान्ति के दिन आएं।" (प्रेरितों 3:19)।

पवित्र शास्त्र की इन बातों से यह बात बिल्कुल स्पष्ट हो जाती है कि मन फिराना सुसमाचार की एक आज्ञा है। इसलिये इसका अर्थ यह है, कि यदि मनुष्य प्रभु की आज्ञा मानकर अपने पापों की क्षमा प्राप्त करना चाहता है, तो आवश्यक है कि प्रत्येक मनुष्य अपने-अपने पापों से मन फिराए। या हम इसे यूं कह सकते हैं, कि मन फिराने के बिना कोई भी मनुष्य स्वर्ग में प्रवेश नहीं कर सकता। केवल एक अच्छा नैतिक जीवन व्यतीत करना ही पर्याप्त नहीं है। किन्तु पापों की क्षमा प्राप्त करने के लिए जिन बातों को मानने की आज्ञा प्रभु ने मनुष्य को दी है उनका स्थान कोई भी अन्य बात नहीं ले सकती।

प्रेरितों के कामों की पुस्तक को पढ़कर उसमें लिखी मन परिवर्तन की घटनाओं में आप पाएंगे कि यदि कहीं मन फिराने की आज्ञा का प्रत्यक्ष उल्लेख नहीं है तो वह कामों के द्वारा प्रकट है। उदाहरणार्थ, प्रेरितों के कामों की पुस्तक के सोलहवें अध्याय में पौलुस और सीलास ने प्रभु का वचन जब जेल के दारोगा तथा उसके परिवार को सुनाया था, तो लिखा है कि उसने उन्हें ले जाकर उनके घाव धोए। यदि यह पश्चाताप नहीं है, तो फिर क्या है? स्वयं पौलुस की घटना में भी हम देखते हैं, प्रेरितों के कामों की पुस्तक के नवें अध्याय के अनुसार, कि वह मसीही लोगों का सतानेवाला था, परन्तु जब उसने प्रभु का दर्शन प्राप्त किया था, तो वह बिल्कुल बदल गया था। न केवल उसने सुसमाचार को ही माना था। परन्तु वही पौलुस जो पहले मसीह का इतना बड़ा शत्रु था, अब वह मसीह और उसकी मृत्यु का प्रचार करने लगा था। क्या यह पश्चाताप नहीं है?

किसी ने कहा है, कि सुसमाचार को मानने के द्वारा मन का परिवर्तन होता है, जो विश्वास के फलस्वरूप होता है; तथा जीवन का परिवर्तन मन फिराने के कारण होता है, और स्थान या स्थिति का परिवर्तन बपतिस्मा लेने के परिणामस्वरूप होता है। मन फिराने और मसीह की आज्ञाओं को

मानने के द्वारा मनुष्य के पाप क्षमा होते हैं या धुल जाते हैं। वह एक नई सृष्टि बन जाता है (2 कुरिन्थियों 5:17), तथा मसीह में एक नया मनुष्य बन जाता है। (गलतियों 3:26-27)। जिन बातों को वह पहिले करता था, अब वह उन्हें नहीं करता। और जिन बातों का पहिले वह विरोध करता था, अब वह उनका समर्थन करता है। सम्पूर्ण संसार में इसके समान और कोई बात नहीं है।

किन्तु, एक मसीही बनने के बाद भी मनुष्य के जीवन में ऐसा अवसर आ सकता है कि उसे फिर से मन फिराने की आवश्यकता पड़े। एक मसीही सिद्ध व्यक्ति नहीं है। यहां तक कि एक अच्छे विश्वासी जन से भी गलती हो सकती है। वे लोग जो जान-बूझकर पाप करते हैं उन्हें चाहिए कि वे अपने पापों को मान लें और उनकी क्षमा के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करें, (याकूब 5:16; प्रेरितों 8:22), अन्यथा, वे नाश होंगे।

परन्तु वे लोग जो अभी मसीही नहीं हैं, अर्थात् मसीह और उसकी कलीसिया में नहीं हैं, उन्हें चाहिए कि वे मसीह की बातों को सुनें, उसमें विश्वास लाएं, अपने पापों से मन फिराएं और मसीह को परमेश्वर का पुत्र मानकर उसे अंगीकार करें, तथा अपने पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लें। ये सभी आज्ञाएं बड़ी ही महत्त्वपूर्ण हैं। अर्थात्, कुछ आज्ञाओं को छोड़कर इनमें से किसी एक को मानने के द्वारा ही मनुष्य का उद्धार नहीं हो सकता। इसी प्रकार एक के अतिरिक्त अन्य आज्ञाओं को मानने के द्वारा भी उद्धार नहीं हो सकता। किन्तु जहाँ तक मन फिराने की बात है, इसका अर्थ यह है कि मनुष्य को चाहिए कि वह अपने प्रत्येक पाप, तथा गलती से, चाहे वह गलती धार्मिक दृष्टिकोण की ही क्यों न हो उन सबसे अपना मन फिराए या उन्हें छोड़े, ताकि वह प्रभु के प्रति एक आज्ञाकारी जीवन व्यतीत कर सके। केवल ऐसा करके ही मनुष्य कह सकता है कि उसने वास्तव में मन फिराने की आज्ञा का पालन किया है।

# मसीह का अंगीकार

सुसमाचार की एक अन्य आज्ञा यह है, कि मनुष्य मसीह को परमेश्वर का पुत्र मानकर अंगीकार करे। अंगीकार करने का अर्थ है, घोषित करना, मान लेना, तथा अपने विश्वास को किसी दूसरे में व्यक्त करना। प्रभु प्रत्येक उस मनुष्य से जो उसकी आज्ञा मानता है इस प्रकार के अंगीकार की आशा रखता है। उसमें इस बात को व्यक्त करने की इच्छा होनी चाहिए कि वह इस बात पर विश्वास करता है कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है। किन्तु यदि वह इस प्रकार का अंगीकार नहीं करना चाहता, तो इसका अर्थ है कि वह प्रभु की आज्ञा मानने को तैयार नहीं है, और इस प्रकार की परिस्थिति में वह उसका अनुसरण कर भी नहीं सकता।

यीशु ने इस अंगीकार के महत्व को एक जगह यह कहकर सिखाया था, कि "जो कोई मनुष्यों के सामने मुझे मान लेगा, उसे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने मान लूंगा। पर जो कोई मनुष्यों के सामने मेरा इन्कार करेगा उस से मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने इन्कार करूंगा।" (मत्ती 10:32-33)। इसी से सम्बन्धित कुछ खास बातों पर अब हम विचार करेंगे।

1. मसीह का अंगीकार करने को सबसे कहा गया है। चाहे कोई भी हो और कहीं पर भी हो।

2. अंगीकार मनुष्य को अपने पापों का नहीं परन्तु मसीह का करना है। प्रभु चाहता है कि पहिले मनुष्य स्वयं को उसे सौंप दे, फिर, वह उसके पापों को उससे दूर करेगा।

3. यह अंगीकार मनुष्यों के सामने किया जाना चाहिए। लोग इसके गवाह होने चाहिए। यदि कोई मसीह में वास्तव में विश्वास करता है तो उसे चाहिए कि मसीह में अपने उस विश्वास को वह सब लोगों के सामने मान ले।

4. जो मनुष्य इस प्रकार मसीह का अंगीकार करता है, प्रभु ने उसी से यह प्रतिज्ञा की है कि वह उसे अपने स्वर्गीय पिता के सामने मान लेगा। अब इस बात पर विचार करें कि जिस व्यक्ति को परमेश्वर का पुत्र अपने पिता के सामने मान लेगा उसके लिये यह कितनी बड़ी आशीष तथा आदर की बात होगी। और प्रभु क्या चाहता है? केवल यह कि वह व्यक्ति उसे मनुष्यों के सामने मान ले।

5. जो लोग उसे मनुष्यों के सामने मान लेने से इन्कार करते हैं, उनका भी इसी प्रकार स्वर्गीय पिता के सामने इन्कार किया जाएगा। न केवल वे उसे मानने से इन्कार करते हैं, किन्तु ऐसा करके वे उसे अस्वीकार करते हैं, और इसी तरह से वह भी उनके साथ करेगा। यह बात सबके लिये है, चाहे वे कोई क्यों न हों और चाहे किसी भी स्थान पर हों।

इस प्रकार हम देखते हैं कि पवित्रशास्त्र के इन दो संक्षिप्त पदों में हमें बहुत कुछ मिलता है। प्रभु यहां हमें दोनों ही बातें बताता है, अर्थात् जो उसे मान लेंगे वे आशीषित होंगे परन्तु जो उसे अस्वीकार करेंगे उन्हें वैसा ही परिणाम भुगतान होगा और यह बात वह हमारे ही ऊपर छोड़ देता है कि इस विषय में हम में से हर एक स्वयं अपना निश्चय करे।

परन्तु किस प्रकार के लोग मसीह को मानने से इन्कार करेंगे? प्रेरित यूहन्ना कहता है, "क्योंकि बहुत से ऐसे भरमानेवाले जगत में निकल आए हैं, जो यह नहीं मानते कि यीशु मसीह शरीर में होकर आया। भरमानेवाला और मसीह का विरोधी यही है।" (2 यूहन्ना 7)। जहां तक इस बात का प्रश्न है कि किसे प्रभु को मान लेना चाहिए, पौलुस कहता है, "और परमेश्वर पिता की महिमा के लिये हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि

यीशु मसीह ही प्रभु है।" (फिलिप्पियों 2:11)।

फिर, हम यह भी देखते हैं, कि यह अंगीकार न केवल मुंह से किया जाता है परन्तु इसे उद्धार पाने के लिये किया जाता है। लिखा है, "कि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे, कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा। क्योंकि धार्मिकता के लिये मन से विश्वास किया जाता है, और उद्धार के लिये मुंह से अंगीकार किया जाता है।" (रोमियों 10:9-10)। अब यहां से पढ़कर कुछ लोग एक गलत धारणा यह बना लेते हैं, कि उद्धार पाने के लिये मनुष्य को केवल इतना ही करना है कि वह अपने पापों को मान ले और प्रभु को स्वीकार कर ले। परन्तु फिर विश्वास का क्या हुआ? निसंदेह, वे कहेंगे कि विश्वास के आधार पर ही उन्होंने माना है। किन्तु, फिर मन फिराने का क्या हुआ? यहां मन फिराने की आवश्यकता को नहीं दिखाया गया है। सो जो लोग एक आसान रास्ता ढूंढ़ रहे हैं वे कई बातों में चूक जाते हैं। परन्तु अगले ही पद, अर्थात् दसवें पद से हम देखते हैं कि विश्वास तथा मसीह का अंगीकार किस तरह उद्धार की योजना में एक समान महत्व रखते हैं। सबसे पहिले, हम यह देखते हैं कि वचन का लेखक बताता है कि मनुष्य किस प्रकार मन से विश्वास करता है, और यह कि विश्वास धार्मिकता या उद्धार के लिये किया जाता है। अर्थात्, अभी उस व्यक्ति ने उद्धार पाया नहीं है, परन्तु उसे पाने के लिये उसने विश्वास किया है। दूसरे, वह दिखाता है, कि उद्धार के लिये मुंह से अंगीकार किया जाता है। अंगीकार यहां यह है, कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है, और फिर हम यही बात इस सम्बन्ध में भी देखते हैं कि यह अंगीकार उद्धार पाने के लिये है, न कि उद्धार के कारण, और इस बात में बड़ा अंतर है। कहने का अभिप्राय यह है, कि मसीह में केवल विश्वास लाना और उसे परमेश्वर का पुत्र मान लेना ही उद्धार पाने के लिये पर्याप्त नहीं है। यद्यपि इसमें कोई संदेह नहीं है कि विश्वास और इस प्रकार के

अंगीकार के बिना किसी जन का भी उद्धार नहीं हो सकता, किन्तु इसके अतिरिक्त कुछ और करना भी आवश्यक है।

इस सम्बन्ध में, अन्त में, हम एक मनुष्य का उदाहरण देखते हैं, जहां बपतिस्मा लेने से पूर्व उससे इस अंगीकार को करने को विशेष रुप से कहा गया था। इस विषय में हम इस प्रकार पढ़ते हैं: "फिर प्रभु के एक दूत ने फिलिप्पुस से कहा; उठकर दक्खिन की ओर जा, जो यरुशलेम से गाज़ा को जाता है, और जंगल में है। वह उठकर चल दिया, और देखो, कूश देश का एक मनुष्य आ रहा था जो खोजा और कूशियों की रानी कन्दाके का मंत्री और खजान्ची था, और भजन करने को यरुशलेम आया था। और वह अपने रथ पर बैठा हुआ था, और यशायाह भविष्द्धक्ता की पुस्तक पढ़ता हुआ लौटा जा रहा था। तब आत्मा ने फिलिप्पुस से कहा, निकट जाकर इस रथ के साथ हो ले। फिलिप्पुस ने उस ओर दौड़कर उसे यशायाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक पढ़ते हुए सुना, और पूछा, कि तू जो पढ़ रहा है क्या उसे समझता भी है? उसने कहा, जब तक कोई मुझे न समझाए तो मैं क्योंकर समझूं? और उसने फिलिप्पुस से बिनती की, कि चढ़कर मेरे पास बैठ। पवित्र शास्त्र का जो अध्याय वह पढ़ रहा था, वह यह था; कि वह भेड़ की नाई बध होने को पहुंचाया गया, और जैसे मेम्ना अपने ऊन कतरनेवालों के सामने चुपचाप रहता है, वैसे ही उसने भी अपना मुंह न खोला। उसकी दीनता में उसका न्याय होने नहीं पाया, और उसके समय के लोगों का वर्णन कौन करेगा, क्योंकि पृथ्वी से उसका प्राण उठाया जाता है। इस पर खोजे ने फिलिप्पुस से पूछा; मैं तुझसे बिनती करता हूं, यह बता कि भविष्यद्वक्ता यह किसके विषय में कहता है, अपने या किसी दूसरे के विषय में। तब फिलिप्पुस ने अपना मुंह खोला, और इसी शास्त्र से आरम्भ करके उसे यीशु का सुसमाचार सुनाया। मार्ग में चलते-चलते वे किसी जल की जगह पहुंचे, तब खोजे ने कहा, देख यहां जल है, अब मुझे बपतिस्मा लेने में क्या रोक है। फिलिप्पुस ने कहा, यदि तू सारे मन से विश्वास

करता है तो हो सकता है: उसने उत्तर दिया, मैं विश्वास करता हूं कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है। तब उसने रथ खड़ा करने की आज्ञा दी, और फिलिप्पुस और खोजा दोनों जल में उतर पड़े, और उसने उसे बपतिस्मा दिया। जब वे जल में से निकलकर ऊपर आए, तो प्रभु का आत्मा फिलिप्पुस को उठा ले गया, सो खोजे ने उसे फिर न देखा, और वह आनन्द करता हुआ अपने मार्ग चला गया।" (प्रेरितों 8:26-39)। अब, जो कुछ यहां हुआ था वह हमारे सामने बड़ा ही स्पष्ट है। फिलिप्पुस ने उस मनुष्य को मसीह का सुसमाचार सुनाया था और उसे बताया था कि उसकी आज्ञा वह किस प्रकार मान सकता है। सो प्रभु का ज्ञान पाकर वह उसकी इच्छा को मानना चाहता था। परन्तु यहां विशेष ध्यान इस बात पर दें, कि उसे बपतिस्मा देने से पूर्व फिलिप्पुस उससे यह जानना चाहता था कि क्या वह यह विश्वास करता है कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है? और खोजे ने कहा, कि हाँ, मैं विश्वास करता हूं, और उसके इस अंगीकार के बाद ही फिलिप्पुस ने उसे बपतिस्मा देने का निश्चय किया। यह एक ऐसा उदाहरण है जिसके आधार पर, तथा मसीह के अंगीकार के सम्बन्ध में मिलनेवाली पवित्र शास्त्र की अन्य बातों को दृष्टि में रखकर, हम प्रत्येक उस मनुष्य से जो मसीह में बपतिस्मा लेना चाहता है, उसे बपतिस्मा देने से पूर्व उससे यह पूछते हैं, कि क्या वह विश्वास करता है कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है। और जब वह इसका उत्तर "हाँ" कहकर देता है, तभी हम उसे बपतिस्मा देने को तैयार होते हैं।

इस अंगीकार को अक्सर अच्छा अंगीकार कहकर भी सम्बोधित किया जाता है, और इसमें कोई संदेह नहीं कि यदि किसी भी अंगीकार को अच्छा कहा जा सकता है, तो वह वास्तव में यही है।

सो हम किस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं? हम देखते हैं कि उद्धार पाने के लिए मनुष्य को चाहिए कि वह सुसमाचार को सुनकर उस पर विश्वास लाए, और अपने पापों से मन फिराए, मसीह को परमेश्वर का पुत्र मानकर

उसका अंगीकार करे, और फिर अपने पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा ले। इस सम्बन्ध में, मसीह का अंगीकार करना उद्धार की योजना का केवल एक भाग है, या सुसमाचार की आज्ञाओं में से एक आज्ञा है। किन्तु केवल इसी आज्ञा को मानकर कोई उद्धार नहीं पा सकता। परन्तु इसे माने बिना भी किसी का उद्धार नहीं हो सकता। यह आज्ञा भी आवश्यक तथा महत्त्वपूर्ण केवल उसी समय ठहरती है जब हम इसे वही स्थान देते हैं जहां इसे प्रभु ने रखा है।

# पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा

कदाचित बपतिस्मा ही एक ऐसा विषय है जिसके ऊपर सदा ही तर्क-वितर्क होता रहता है। किन्तु, फिर भी, यह बाइबल का एक विषय है और सुसमाचार की आज्ञाओं में से एक आज्ञा है। यद्यपि कि यह आज्ञा अन्य आज्ञाओं से बढ़कर कुछ अधिक महत्व नहीं रखती, परन्तु तौभी यह उतनी ही आवश्यक है जितनी कि अन्य आज्ञाएं हैं। मनुष्य किसी भी एक ही आज्ञा को मानकर उद्धार नहीं पा सकता, परन्तु सुसमाचार की सारी आज्ञाओं को मानने के द्वारा ही मनुष्य को उद्धार मिलता है।

प्रस्तुत पाठ को हम इसलिये देखने जा रहे हैं ताकि हम बपतिस्मे के बारे में अधिक और सही जानकारी प्राप्त करें। आरम्भ में हम यह देखने का प्रयत्न करेंगे कि इसका अर्थ क्या है? और यह देखना आसान है। बपतिस्मा शब्द यूनानी भाषा से लिया गया है, और इसका अर्थ है डूबना, गाड़े जाना या दफ़न होना। इस बात की पुष्टि पवित्र शास्त्र भी करता है। जैसे कि, हम पढ़ते हैं, "सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें।" (रोमियों 6:4)। "और उसी के साथ बपतिस्मा में गाड़े गए, और उसी में परमेश्वर की शक्ति पर विश्वास करके, जिसने उसको मरे हुओं में से जिलाया, उसके साथ जी भी उठे।" (कुलुस्सियों 2:12)। परन्तु क्या इसका अर्थ छिड़काव करना या उन्डेलना नहीं हो सकता? कदापि नहीं! ऐसी शिक्षा मनुष्यों की ओर से हो सकती है, और उसे ग्रहण नहीं किया जा सकता।

इस प्रकार की शिक्षाओं को गाड़े जाने के स्थान पर बाद में माना वा सिखाया जाने लगा था। परन्तु जो लोग प्रभु के वचन का आदर करते हैं वे ऐसी-ऐसी बातों को कभी भी स्वीकार नहीं कर सकते।

फिर, हम बाइबल में कुछ अन्य प्रकार के बपतिस्मों के बारे में भी पढ़ते हैं। किन्तु प्रेरित पौलुस, दूसरी ओर, इफिसियों 4:5 में कहता है, कि केवल एक ही बपतिस्मा है। सो प्रभु के वचनानुसार आज कौन सा बपतिस्मा आवश्यक है? जब हम बाइबल में से प्रेरितों 8:26-39 में से पढ़ते हैं, तो वहां हमें फिलिप्पुस तथा खोजे के विषय में मिलता है। फिलिप्पुस के द्वारा मसीह यीशु तथा उसकी आज्ञाओं के बारे में जानकारी प्राप्त करने के बाद, हम देखते हैं, कि वह मनुष्य बपतिस्मा लेना चाहता था। और इस प्रकार लिखा है, कि, "मार्ग में चलते-चलते वे किसी जल की जगह पहुंचे, तब खोजे ने कहा, देख यहां जल है, अब मुझे बपतिस्मा लेने में क्या रोक है। फिलिप्पुस ने कहा, यदि तू सारे मन से विश्वास करता है तो हो सकता है: उसने उत्तर दिया कि मैं विश्वास करता हूं कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है। तब उसने रथ खड़ा करने की आज्ञा दी, और फिलिप्पुस और खोजा दोनों जल में उतर पड़े, और उसने उसे बपतिस्मा दिया। जब वे जल में से निकलकर ऊपर आए, तो प्रभु का आत्मा फिलिप्पुस को उठा ले गया, सो खोजे ने उसे फिर न देखा और वह आनन्द करता हुआ अपने मार्ग चला गया।" अब यहां कुछ मुख्य बातों पर ध्यान दें:

1. वह मनुष्य प्रभु की आज्ञा मानना चाहता था, अर्थात् वह बपतिस्मा लेना चाहता था।

2. वह बपतिस्मा लेने के द्वारा गाड़ा गया था, और जल के भीतर गाड़ा गया था।

3. इसे ध्यान में रखकर, इस विषय में शब्दों को तोड़-मरोड़कर किसी और ढंग से समझने की कोई बात ही नहीं रह जाती। फिर हम यह

भी इस घटना में देखते हैं कि वे दोनों जल में उतर पड़े थे, और इसे और स्पष्ट करने के दृष्टिकोण से लेखक बताता है कि दोनों का अभिप्राय फिलिप्पुस तथा खोजे से है। और फिर इसलिए कि कोई संदेह न रह जाए वह बताता है कि बपतिस्मा ले लेने के बाद वे दोनों जल में से निकलकर ऊपर आए थे। अब इस बारे में तर्क कौन करना चाहेगा? कोई भी नहीं। यदि हम प्रभु के वचन को ज्यों का त्यों ग्रहण करते हैं।

फिर यूहन्ना 3:3-5 में हम पढ़ते हैं, कि "यीशु ने उसको उत्तर दिया; कि मैं तुझ से सच-सच कहता हूं, यदि कोई नए सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता। नीकुदेमुस ने उस से कहा, मनुष्य जब बूढ़ा हो गया, तो क्योंकर जन्म ले सकता है? क्या वह अपनी माता के गर्भ में दूसरी बार प्रवेश करके जन्म ले सकता है? यीशु ने उत्तर दिया, कि मैं तुझसे सच-सच कहता हूं; जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।" अब, मनुष्य के उद्धार के सम्बन्ध में जल का क्या स्थान है? यह समझना बिल्कुल साधारण बात है। जल का सम्बन्ध बपतिस्मा लेने से है, और ठीक यही बात यहां विचाराधीन है। आत्मा परमेश्वर के वचन के द्वारा मनुष्य की अगुवाई करता है, और जब उस की बात मानकर मनुष्य बपतिस्मा लेता है तो इस प्रकार उसका नया जन्म होता है। (1 पतरस 1:23)। हम जानते हैं कि इस बात की पुष्टि पवित्रशास्त्र में से कुछ अन्य स्थानों पर से पढ़कर भी होती है, जैसे कि 1 कुरिन्थियों 12:13; रोमियों 6:3, 4, इत्यादि, जो हमें बताते हैं कि बपतिस्मा लेने के द्वारा मनुष्य मसीह में, और उसकी कलीसिया में, और उसके राज्य में प्रवेश करता है।

इसके अतिरिक्त, एक जगह पौलुस ने तीतुस को लिखकर यूं कहा था, "तो उसने हमारा उद्धार किया, और यह धर्म के कामों के कारण नहीं, जो हमने आप किए, पर अपनी दया के अनुसार, नए जन्म के स्नान, और पवित्र आत्मा के हमें नया बनाने के द्वारा हुआ।" (तीतुस 3:5)। यहां नए

जन्म के स्नान का अभिप्राय जल में बपतिस्मा लेने से है, और इस बात से उसका ठीक यही तात्पर्य है। बपतिस्मा लेने का अर्थ "गाड़े जाना" है, और यह "गाड़ा जाना" पानी के भीतर है, और पवित्र शास्त्र का केवल यही एक बपतिस्मा आज आवश्यक है।

बपतिस्मा लेने के महत्व की बात हमें उस समय और भी ठीक से समझ में आ जाती है जब हम पवित्र शास्त्र में से इस सम्बन्ध में मिलनेवाले ऐसे पदों को पढ़ते हैं जो हमें बताते हैं कि इसके द्वारा क्या होता है। उदाहरणार्थ, लिखा है कि, बपतिस्मा बचाता है। "और उसी पानी का दृष्टान्त भी, अर्थात् बपतिस्मा, यीशु मसीह के जी उठने के द्वारा, अब तुम्हें बचाता है; (उससे शरीर के मैल को दूर करने का अर्थ नहीं है, परन्तु शुद्ध विवेक से परमेश्वर के वश में हो जाने का अर्थ है।" (1 पतरस 3:21)। यहां प्रेरित के कहने का यह अभिप्राय नहीं है कि केवल बपतिस्मा ले लेने के द्वारा ही उद्धार होता है, परन्तु बपतिस्मा तब बचाता है जब बपतिस्मा प्रभु के वचन की शिक्षा अनुसार लिया जाता है। परन्तु फिर, स्वयं यीशु ने कहा था कि, "जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।" (मरकुस 16:16)। सो बपतिस्मा कब बचाता है? जब मनुष्य विश्वास करके बपतिस्मा लेता है। इस बात को अस्वीकार करना, स्वयं मसीह को ग्रहण न करने के समान है।

फिर, आगे हम यूं भी देखते हैं, कि बपतिस्मा पापों की क्षमा के लिए लिया जाता है। हम पढ़ते हैं: "पतरस ने उनसे कहा, मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।" (प्रेरितों 2:38)। ऐसे ही, हम देखते हैं, कि शाऊल से कहा गया था कि तू अपने पापों को धो डालने के लिए बपतिस्मा ले। उससे कहा गया था: "अब क्यों देर करता है? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों

को धो डाल।" (प्रेरितों 22:16)। इसके अतिरिक्त, यह प्रभु की एक आज्ञा है: "और उसने आज्ञा दी कि उन्हें यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा दिया जाए।" (प्रेरितों 10:48)।

उद्धार, पापों की क्षमा, इत्यादि के अतिरिक्त, हम यह भी देखते हैं, कि यह एक ऐसी आज्ञा है जिसे मानने के द्वारा मनुष्य मसीह के लोहु के सम्पर्क में आता है, जिसके परिणामस्वरूप ही उसे पापों की क्षमा मिल सकती है। मत्ती 26:28 के द्वारा हम देखते हैं कि यीशु मसीह ने अपना लोहु पापों की क्षमा के लिये बहाया था। परन्तु जब पतरस ने लोगों से पिन्तेकुस्त के दिन कहा था, कि यदि वे अपने पापों की क्षमा पाना चाहते हैं तो उन्हें चाहिए कि पापों से मन फिराएं और अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लें, तो इसका अर्थ यह हुआ कि इन साधारण आज्ञाओं को मानने के द्वारा मनुष्य का सम्पर्क मसीह के लोहु के साथ होता है जिसके परिणामस्वरूप उसके पाप धुल जाते हैं। इसी प्रकार, इफिसियों 1:7 के अनुसार हम देखते हैं कि मसीह के लोहु के द्वारा ही मनुष्य अपने पापों की क्षमा प्राप्त करता है। परन्तु फिर, शाऊल के बारे में हमने देखा था, कि उससे कहा गया था कि अपने पापों को धो डालने या उनकी क्षमा प्राप्त करने के लिए उसे बपतिस्मा लेना चाहिए। सो इस तरह एक बार फिर से यह बात स्पष्ट हो जाती है, कि बपतिस्मा लेने से मनुष्य मसीह के लोहु के सम्पर्क में आता है जो उसके पापों को धोता है। ऐसे ही रोमियों 6 अध्याय से भी हम यह देखते हैं कि हम मसीह की मृत्यु का बपतिस्मा लेते हैं, जिसका अर्थ है, कि प्रभु की इस आज्ञा को मानने के द्वारा हम उसकी मृत्यु के उस लाभ तक पहुंचते हैं, जो कि पापों की क्षमा है।

आगे हम यह भी पढ़ते हैं, कि बपतिस्मा लेने के द्वारा हम मसीह के भीतर हो जाते हैं। गलतिया नामक स्थान पर अपने मसीही भाइयों को लिखकर एक जगह पौलुस यूं कहता है, "क्योंकि तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की संतान हो। और तुम में

से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है।" (गलतियों 3:26, 27)।

किन्तु, फिर भी इस बात को एक बार फिर से स्पष्ट कर देना बड़ा ही आवश्यक है, कि उद्धार पाने के लिए केवल बपतिस्मा लेना ही आवश्यक नहीं है, अर्थात् केवल बपतिस्मा लेने से ही उद्धार नहीं होता है, परन्तु तौभी बिना बपतिस्मा लिये भी किसी का उद्धार न होगा। पवित्र वचन में हमें इस प्रकार की कोई शिक्षा नहीं मिलती कि किसी मनुष्य का उद्धार बपतिस्मा लेने से पहिले हो सकता है। सो, केवल यही समझ लेना कि बपतिस्मा क्या है, अधिक नहीं है। परन्तु यह समझना भी बड़ा ही आवश्यक है कि बपतिस्मा लेने का उद्देश्य क्या है। चाहे कोई व्यक्ति एक दर्जन बार भी जल के भीतर क्यों न दफ़नाया गया हो परन्तु यदि वह कभी भी उचित उद्देश्य के लिए न गाड़ा गया हो, तो पवित्र शास्त्र की शिक्षानुसार वास्तव में उसका बपतिस्मा कभी नहीं हुआ है। हां, बपतिस्मा केवल एक ही है, परन्तु वह बाइबल का बपतिस्मा केवल तभी हो सकता है यदि उसके द्वारा मनुष्य जल के भीतर गाड़ा गया है, पापों की क्षमा प्राप्त करने के लिये, और उसके परिणामस्वरूप वह उस कलीसिया में मिल गया है जिसके बारे में हमें बाइबल में मिलता है।

परन्तु बपतिस्मा कब बचाता है? केवल तभी यदि मनुष्य ने सत्य-सुसमाचार को सुना हो, और उस पर विश्वास किया हो, और सचमुच में अपने पापों से मन फिराया हो, और मसीह का यह अंगीकार किया हो, कि वह परमेश्वर का पुत्र है, और तब पवित्र वचन की शिक्षानुसार बपतिस्मा लिया हो। तभी, और केवल तभी बपतिस्मा मनुष्य को बचाता है। दूसरे शब्दों में, उद्धार पाने से सम्बन्धित आज्ञाओं में से यह एक प्रमुख आज्ञा है जिसे मानने पर वह मनुष्य जो मसीह के बाहर है, उसके भीतर हो जाता है। उद्धार पाने के लिये जिन कदमों को मनुष्य को उठाना आवश्यक है उनमें से यह एक आवश्यक कदम है जो उसे मसीह

तथा उसकी कलीसिया में मिलाता है।

इस विषय में एक अंतिम बात हम यह भी देखते हैं, कि बपतिस्मा लेने के द्वारा एक मनुष्य जल रूपी कब्र के भीतर प्रभु के साथ दफ़न हो जाता है और फिर वह उस जल की कब्र में से बाहर आकर एक नए जीवन की सी चाल चलने के लिए जी उठता है। सो इस प्रकार, यह आज्ञा प्रभु के गाड़े जाने तथा उसके जी उठने को चित्रित करती है। निसंदेह, हम प्रभु के मार्ग या उसकी योजना में किसी भी तरह का कोई बदलाव या सुधार नहीं कर सकते। सुझाव: अपनी बाइबल या नए नियम में से रोमियों 6 अध्याय को अवश्य पढ़िए।

# सुसमाचार के वरदान

सुसमाचार की विशेषताओं तथा आज्ञाओं के अतिरिक्त बाइबल में हमें सुसमाचार के वरदानों के विषय में भी मिलता है। यह सच है, कि हमें चाहिए कि हम इन वास्तविकताओं पर विश्वास करें, और इन आज्ञाओं का पालन करें, और जो लोग ऐसा करेंगे वे ही इन वरदानों को भी प्राप्त करेंगे। प्रेरित पौलुस एक जगह कहता है, "हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो, कि उसने हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आशीष दी हैं।" (इफिसियों 1:3)। इसी प्रकार अपने मसीही भाइयों को रोम में लिखकर उसने यूं कहा था, "और मैं जानता हूं, कि जब मैं तुम्हारे पास आऊंगा, तो मसीह की पूरी आशीष के साथ आऊँगा।" (रोमियों 15:29)।

ये आशीष क्या है? यूं तो आशीष अनेकों हैं, परन्तु यहां हम इनमें से कुछ विशेष आशीषों का वर्णन करने जा रहे हैं जो इस प्रकार हैं:

1. मसीह के सुसमाचार को मानने के कारण मनुष्य को पापों की क्षमा मिलती है। "पतरस ने उनसे कहा, मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।" (प्रेरितों 2:38)। यह इस बात को कहने का एक दूसरा ढंग है, कि जिस मनुष्य का उद्धार हुआ है (मरकुस 16:16), उसका नया जन्म हुआ है। (यूहन्ना 3:5)। मनुष्य को इस बात का ज्ञान होना, कि उसके सारे पाप धुल चुके हैं और अब वह एक नया मनुष्य है जो अपने जीवन को फिर से एक नए ढंग से आरम्भ करेगा, कितनी अद्‌भुत बात है।

2. सुसमाचार को मानकर मनुष्य मसीह में प्रवेश करता है। "क्या तुम नहीं जानते कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया?" (रोमियों 6:3)। "क्योंकि तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की सन्तान हो। और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है।" (गलतियों 3:26, 27)। "सो यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है: पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, वे सब नई हो गईं।" (2 कुरिन्थियों 5:17)। सो क्योंकि हम मसीह में हैं, इस कारण हमारी पहुंच उन सब आत्मिक आशीषों तक है जो प्रभु के पास उसके सब लोगों के लिए हैं।

3. सुसमाचार को मानने के द्वारा हम मसीह की देह, अर्थात् उसकी कलीसिया में शामिल होते हैं। प्रेरित पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 12 अध्याय में मसीह की देह के सम्बन्ध में बड़े ही विस्तार से बताया है, और हमें यह भी स्पष्ट रुप से बताया गया है कि "देह" का अभिप्राय कलीसिया से है। (कुलुस्सियों 1:18; इफिसियों 1:22, 23)। फिर वह यह भी स्पष्ट करके कहता है कि बपतिस्मा लेने के द्वारा ही हम देह या कलीसिया के भीतर शामिल होते हैं। "क्योंकि हम सबने क्या यहूदी हो, क्या यूनानी, क्या दास, क्या स्वतंत्र, एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिए बपतिस्मा लिया, और हम सब को एक ही आत्मा पिलाया गया।" (1 कुरिन्थियों 12:13)। संसार भर में मसीह की कलीसिया एक बड़ी ही विशाल संस्था है। इसे नाश नहीं किया जा सकता, परन्तु यह हमेशा बनी रहेगी। सो इस प्रकार की देह या मण्डली का एक अंग होना, अर्थात् प्रभु की कलीसिया का एक सदस्य होना, कितनी अद्‌भुत तथा महान बात है।

4. अब, क्योंकि हम परमेश्वर की सन्तान हैं, इसलिए हम मसीही हैं। "पर यदि मसीही होने के कारण दुख पाए, तो लज्जित न हो, पर इस बात के लिए परमेश्वर की महिमा करे।" (1 पतरस 4:16)। क्यों? क्योंकि मसीह के नाम में उद्धार है। "और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं;

क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें।" (प्रेरितों 4:12)। इस बात पर विचार करें, कि मसीह पर विश्वास करने और उसकी आज्ञाओं को मानने पर वह हमें इतने आदर के योग्य समझता है कि वह हमें अपने नाम से कहलाने का अधिकार देता है! यह बात अपने आप में ही एक बहुत बड़ी आशीष है।

5. मसीही होने के कारण हम इस योग्य हैं कि हम प्रभु की उपासना कर सकते हैं। "परन्तु वह समय आता है, वरन अब भी है जिसमें सच्चे भक्त पिता का भजन आत्मा और सच्चाई से करेंगे, क्योंकि पिता अपने लिए ऐसे ही भजन करनेवालों को ढूंढ़ता है। परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसके भजन करनेवाले आत्मा और सच्चाई से भजन करें।" (यूहन्ना 4:23, 24)। इस विषय में हमें चेतावनी भी दी गई है कि हम एक दूसरे के साथ एकत्रित होना न छोड़ें। "और एक दूसरे के साथ इक्ट्ठा होना न छोड़ें, जैसे कि कितनों की रीति है, पर एक दूसरे को समझाते रहें; और ज्यों-ज्यों उस दिन को निकट आते देखो, त्यों-त्यों और भी अधिक यह किया करो"। (इब्रानियों 10:15)। यह हमारे लिए कितने बड़े अधिकार और आदर की बात है कि हम प्रभु के लोगों के साथ प्रत्येक सप्ताह के पहिले दिन एकत्रित होकर प्रभु की उपासना कर सकते हैं। इसे हमें कोई उत्तरदायित्व या कर्त्तव्य नहीं समझना चाहिए, परन्तु इसे हमें अपना विशेष अधिकार मानना चाहिए। प्रभु ने इस बात की प्रतिज्ञा की है कि वह हमारा माननीय अतिथि होकर हमारे बीच में उपस्थित होगा, निसंदेह, हम उसे मायूस न करना चाहेंगे। उसने स्वयं कहा है, "क्योंकि जहां दो या तीन मेरे नाम पर इक्ट्ठे होते हैं, वहां मैं उनके बीच में होता हूं।" (मत्ती 18:20)।

6. फिर, हमारे पास आपसी संगति की आशीष है। "और वे प्रेरितों से शिक्षा पाने, और संगीत रखने में और रोटी तोड़ने में और प्रार्थना करने में लौलीन रहे।" (प्रेरितों 2:42)। हम जो मसीही हैं हमें ऐसी सहायता तथा प्रोत्साहन की आवश्यकता है जो हमें हमारे साथी मसीही ही दे सकते

हैं। प्रत्येक सप्ताह के पहले दिन में इक्ट्ठे होने का एक उद्देश्य यह भी है। इस प्रकार एकत्रित होने से तथा उपासना और सेवा के द्वारा जो संगति हमें प्राप्त होती है वह स्वयं ही बड़ी आशीष का कारण सिद्ध हो सकती है।

7. हमें प्रार्थना करने का भी अधिकार प्राप्त है। परमेश्वर सबकी नहीं सुनता। पवित्र शास्त्र में लिखा है, "हम जानते हैं कि परमेश्वर पापियों की नहीं सुनता परन्तु यदि कोई परमेश्वर का भक्त हो, और उसकी इच्छा पर चलता है, तो वह उसकी सुनता है।" (यूहन्ना 9:31)। दूसरे शब्दों में, प्रार्थना का अधिकार परमेश्वर के एक बालक को ही है, जो परमेश्वर को अपना पिता कहकर उसके पास आ सकता है। किन्तु, तौभी उसकी प्रार्थना के सुने जाने और उसके निवेदन को ग्रहण किए जाने के लिए यह आवश्यक है कि उसकी प्रार्थना परमेश्वर की इच्छा के अनुसार हो। जैसे कि लिखा है, "और हमें उसके सामने जो हियाव होता है, वह यह है; कि यदि हम उसकी इच्छा के अनुसार कुछ मांगते हैं, तो वह हमारी सुनता है।" (1 यूहन्ना 5:14)। परन्तु फिर हम आगे देखते हैं, कि इब्रानियों की पत्री का लेखक कहता है, "इसलिए आओ, हम अनुग्रह के सिंहासन के सामने हियाव बांधकर चलें, कि हम पर दया हो, और वह अनुग्रह पाएं जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करे।" (इब्रानियों 4:16)। यहां वह प्रार्थना के बड़े अधिकार के विषय में कह रहा है। इस बात के लिए हमें कितना अधिक धन्यवादी होना चाहिए कि हमारी आवश्यकता या समस्या, जिसके विषय में हमें प्रभु से प्रार्थना करनी है, चाहे वह किसी भी प्रकार की क्यों न हो, उसे हम यह जानते हुए उसके सम्मुख ला सकते हैं, कि हम उसकी संतान हैं, इसलिए हम उसे बता सकते हैं, और वह सहानुभूति के साथ हमारी आवश्यकता को समझकर हमारे निवेदनों का उचित उत्तर देगा।

8. फिर, इस बात पर भी ग़ौर करें कि यह कितने आदर की बात है, कि प्रत्येक सप्ताह के पहिले दिन प्रभु-भोज में भाग लेकर हम उसे स्मरण करते हैं। इस बारे में पौलुस एक जगह इस प्रकार कहता है: "वह

धन्यवाद का कटोरा, जिस पर हम धन्यवाद करते हैं, क्या मसीह के लोहु की सहभागिता नहीं? वह रोटी जिसे हम तोड़ते हैं, क्या वह मसीह की देह की सहभागिता नहीं?" (1 कुरिन्थियों 10:16)। वास्तव में यह एक बहुत ही बड़ी आत्मिक आशीष है कि हम इस योग्य हैं, कि हम इस प्रकार उसकी देह तथा उसके लोहू को स्मरण करने के द्वारा उसके प्रति अपनी भक्ति तथा श्रद्धा को प्रकट कर सकते हैं, जिसने हमारे लिए अपने प्राणों को दे दिया था, और इसके कारण हम अपने विश्वास में और अधिक दृढ़ होते जाते हैं।

9. मसीह के सुसमाचार को मानकर, हमने पवित्र आत्मा प्राप्त किया है। एक बार फिर से प्रेरितों 2:38 पर ध्यान देकर हम देखते हैं, कि पतरस वहां कहता है कि मन फिराने तथा बपतिस्मा लेने के द्वारा हमें पापों की क्षमा तथा पवित्रात्मा का दान प्राप्त होता है। परमेश्वर, मसीह, और पवित्र आत्मा का हमारे भीतर विद्यमान होना एक ऐसी आशीष है जिसकी तुलना किसी भी अन्य आशीष के साथ नहीं की जा सकती। क्या हमारे लिए इससे भी बढ़कर कोई सम्मान जनक बात हो सकती है?

10. एक और आशीष हमारे पास यह है, कि हम अपने जीवनों को प्रभु के लिए व्यतीत कर सकते हैं, अर्थात् हम इस पृथ्वी पर उसका प्रतिनिधित्व करते हैं। "और वचन से या काम से जो कुछ भी करो सब प्रभु यीशु के नाम से करो, और उसके द्वारा परमेश्वर पिता का धन्यवाद करो।" (कुलुस्सियों 3:17)। यीशु ने स्वयं कहा है, "इसलिए पहिले तुम उसके राज्य और धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएंगी।" (मत्ती 6:33)।

11. हमें यह आनन्द भी प्राप्त है कि हम अन्य लोगों को प्रभु के मार्ग की शिक्षा दे सकते हैं, यह जानते हुए कि प्रभु सर्वदा हमारे साथ रहेगा। अन्य लोगों के लिए, और यहां तक कि सम्पूर्ण संसार के लिए, इतनी बड़ी आशीष का कारण इसे छोड़ क्या किसी और तरह से भी हम बन सकते हैं कि हम उन्हें सच्चाई का मार्ग बताकर उन्हें मसीह के पास ला सकते

हैं? न केवल यही, परन्तु इस बात को ध्यान में रखकर कि जबकि हम प्रभु की इच्छा पर चलने में प्रयत्नशील हैं तो उसने हम से प्रतिज्ञा करके कहा है कि वह अब और हमेशा हमारे साथ रहेगा। यह कितना बड़ा आश्वासन है। इसे उसी के शब्दों में सुनिये: "इसलिए तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ, और देखो, मैं जगत के अंत तक सदैव तुम्हारे संग हूं।" (मत्ती 28:19-20)।

12. और, अंत में, इस विषय में हम देखते हैं, कि प्रभु ने यह प्रतिज्ञा की है, कि यदि हम उसकी आज्ञाओं को मानें और उसके प्रति विश्वासी बने रहें, तो वह हमें जीवन का मुकुट अर्थात् अनन्त जीवन देगा। "धन्य वे हैं, जो अपने वस्त्र धो लेते हैं, क्योंकि उन्हें जीवन के पेड़ के पास आने का अधिकार मिलेगा, और वे फाटकों से होकर नगर में प्रवेश करेंगे।" (प्रकाशितवाक्य 22:14)। "... प्राण देने तक विश्वासी रह तो मैं तुझे जीवन का मुकुट दूंगा।" (प्रकाशितवाक्य 2:10)।

अब, इन बातों को ध्यान में रखकर, कौन कह सकता है, कि प्रभु अपने लोगों की सुधि नहीं लेता? कौन कहता है, कि मसीही जीवन आनन्दमय जीवन नहीं है? कौन कहता है, कि मसीही जीवन से कुछ भी प्राप्त न होगा? कौन कहता है, कि मसीही जीवन आशारहित जीवन है? मसीही जीवन, वास्तव में, सबसे उत्तम जीवन है, यह एक ऐसा जीवन है जो उत्तम आशीषों से भरपूर है। जिसके कारण, मनुष्य अपने पापों से स्वतंत्र होकर एक अच्छा और शान्तिपूर्ण जीवन व्यतीत करता है, उसके पास इस जीवन में और आनेवाले जीवन के लिये सब कुछ है। भौतिक तथा आत्मिक दोनों ही तरह से वह आशीषित है। और इस सबका आरम्भ मनुष्य के जीवन में उस समय होता है जब वह सुसमाचार को मानता है। यही वास्तव में उसके नए जीवन का आरम्भ है। और यही उन सब आशीषों का भी आरम्भ है जिनका कोई अन्त नहीं है।

# सुसमाचार का प्रचार

यीशु मसीह ने कहा था, "इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ: और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं।" (मत्ती 28:19, 20)। उसने यह भी कहा था, "तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो। जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।" (मरकुस : 16:15, 16)।

इस सम्बन्ध में अब हम कुछ ख़ास बातों के ऊपर विचार करेंगे:

1. यीशु ने प्रेरितों को जाने की आज्ञा दी थी, और न केवल प्रभु ने प्रेरितों से जाने को ही कहा था, परन्तु उसने यह भी बताया था, कि उन्हें कहां जाना है। उसने उनसे कहा था, कि तुम सारे संसार में जाओ, संसार की सारी जातियों के पास जाओ, और यह, कि सारी सृष्टि के लोगों के पास जाओ। इसका अभिप्राय प्रत्येक मनुष्य से था, और कोई भी जन छोड़ा नहीं जा सकता था। उस समय को दृष्टि में रखते हुए भी, जबकि यह आज्ञा प्रभु ने दी थी, यह एक बड़ा ही भारी काम था, क्योंकि उनके पास उस समय आने-जाने और पत्राचार इत्यादि के ऐसे साधन उपलब्ध नहीं थे जैसे कि आज हमारे पास हैं, परन्तु तौभी, यह प्रभु का आदेश था, और निसंदेह, उसने किसी असम्भव काम को करने को नहीं कहा होगा।

2. यीशु ने प्रेरितों को आज्ञा दी थी कि तुम जाकर प्रचार करो। और

उन्हें प्रचार करने की आज्ञा देने के साथ, उसने यह भी स्पष्ट किया था कि उन्हें क्या प्रचार करना है। उसने कहा था, सुसमाचार प्रचार करो, और इस बात को समझने में किसी भी प्रकार की कोई गलती न हो, इसलिये उसने इन शब्दों में और भी स्पष्ट करके कहा था, "जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा। (मरकुस 16:16)।

3. यीशु ने प्रेरितों से उन्हें बपतिस्मा देने को कहा था जो सुसमाचार को मानने के इच्छुक हों। अब, सबसे पहिले हम इस बात को समझ लें, कि सम्पूर्ण संसार में सुसमाचार को ले जाने की ज़िम्मेदारी प्रभु ने प्रेरितों को सौंपी थी। वे इस बात के लिये ज़िम्मेदार नहीं थे कि लोग सुसमाचार को मानते हैं या नहीं, या इसी प्रकार की अन्य किसी बात के लिये भी वे ज़िम्मेदार नहीं थे। परन्तु उनका काम यह था कि वे इस बात को देखें कि सुसमाचार का प्रचार सब लोगों में हो जाए। किन्तु सुसमाचार को सुनाए जाने के बाद यदि सुननेवाले सुसमाचार को मानने की इच्छा व्यक्त करें, तो प्रभु ने उन्हें उन लोगों को बपतिस्मा देने को कहा था। परन्तु, फिर इसी के साथ यह स्पष्ट करते हुए, कि बपतिस्मा किस रीति से दिया जाए, प्रभु ने कहा था, "और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से बपतिस्मा दो।" (मत्ती 28:19)। यहां भी हम देखेते हैं, कि प्रभु नहीं चाहता कि इस विषय में किसी को भी किसी प्रकार की कोई गलती हो।

4. फिर, अन्त में हम देखते हैं, कि यीशु ने आज्ञा दी थी, कि जो लोग सुसमाचार को मान लेते हैं उन्हें आगे और शिक्षा दी जाए।

इस बात पर एक बार फिर से ध्यान दें, कि यह प्रभु की आज्ञा थी कि वे जाकर सब लोगों में सुसमाचार का प्रचार करें, और उन्हें बपतिस्मा दें जो प्रभु की आज्ञा मानने को तैयार हों। परन्तु यह करने के बाद, एक और ज़िम्मेदारी आ जाती है, जिसका वर्णन स्वयं यीशु के ही शब्दों में हम यूं पढ़ते हैं, "और उन्हें सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना

सिखाओ: और, देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं।" (मत्ती 28:20)। इसका अर्थ इसलिये यह हुआ कि चाहे किसी भी तरह से हम इसे देखें, प्रभु ने इस सम्बन्ध में प्रत्येक बात का पूरा ध्यान रखा था। उसने अपनी इच्छा व्यक्त करके कहा था, कि जो लोग सुसमाचार के आरम्भिक सिद्धांतों का पालन कर लेते हैं वे आत्मिक रूप से मरने को न छोड़ दिए जाएं, परन्तु इसके विपरीत उन्हें और अधिक शिक्षा दी जाए और मसीही जीवन व्यतीत करने के सम्बन्ध में और अधिक सिखाया जाए। इस प्रकार प्रभु ने यह दिखाया था कि वह न केवल यही चाहता था कि वे वर्तमान के लिये ही उद्धार पाएं परन्तु हमेशा के लिये। उसकी इच्छा थी कि वे एक विश्वासपूर्ण मसीही जीवन बिताएं।

अभी जो ऊपर हमने देखा है, इसे अकसर महत्त्वपूर्ण या विशाल आज्ञा कहकर सम्बोधित किया जाता है, क्योंकि इस आज्ञा में सम्पूर्ण संसार को सुसमाचार सुनाने को कहा गया है, और इसका संदेश प्रत्येक आत्मा के उद्धार के लिए बड़ा ही आवश्यक तथा महत्त्वपूर्ण है। परन्तु आगे चलकर हम देखते हैं, कि प्रभु की योजनानुसार उसके इस आदेश का किस प्रकार पालन किया गया था। प्रेरितों 1:8 को पढ़कर हम देखते हैं कि प्रभु की योजना को एक भूगौलिक रूप दिया गया था। इस सम्बन्ध में इस बात पर ध्यान दें कि प्रभु ने प्रेरितों से कहा था कि, "परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे, और यरुशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे।" प्रेरितों के कामों की पुस्तक को पढ़ते हुए हमें मिलता है, कि ये बातें ठीक ऐसे ही घटी थीं। अब, इस बारे में ध्यान से देखें:

1. सुसमाचार के प्रचार का आरम्भ यरुशलेम से होना था। जब हम प्रेरितों के कामों की पुस्तक के 1 तथा 2 अध्याय को पढ़ते हैं तो हम इस तरह देखते हैं: सारे प्रेरित यरुशलेम में हैं, फिर पिन्तेकुस्त का दिन आता है, और सारे यहूदी संसार भर में से आकर वहां एकत्रित हैं। तब एकाएक

प्रेरितों के ऊपर पवित्र आत्मा आता है जिस से उन्हें यह सामर्थ प्राप्त होती है कि वे उन एकत्रित लोगों से उन्हीं की भाषाओं में बातें कर सकें, और तभी से हम देखते हैं कि उन्होंने सुसमाचार का प्रचार करना आरम्भ कर दिया था। प्रचार के परिणाम स्वरूप वहां लगभग तीन हज़ार लोगों ने वचन को ग्रहण किया था, और बपतिस्मा लिया था, और वे कलीसिया में मिलाए गए थे। सो यहां से सुसमाचार का फैलना आरम्भ हुआ। यहां यह भी कहा जा सकता है, कि प्रभु की आज्ञानुसार जब इस समय सुसमाचार का प्रचार किया गया, जबकि वहां इतने अधिक लोग संसार भर में से आकर एकत्रित हुए थे, तो इसका अभिप्राय यह हुआ कि जब उनमें से बहुतेरों ने प्रभु की आज्ञा मानी और जब वे वहां से अपने-अपने देश को वापस लौटे तो उन लोगों के प्रचार के फलस्वरूप सुसमाचार अनेक स्थानों पर पहुंच गया था। उदाहरणार्थ, जैसे कि हम पढ़ते हैं कि उन तीन हज़ार लोगों के बीच कुछ लोग रोम के भी थे। बाद में हम पढ़ते हैं कि इससे भी पहिले कि पौलुस वहां पहुंचता, कलीसिया वहां पहिले ही से विद्यमान थी, और पवित्रशास्त्र में हमें ऐसा कहीं नहीं मिलता कि पतरस वहां कभी भी गया हो, या कोई अन्य प्रेरित इस से पूर्व वहां कभी पहुंचा हो। सो इसका अर्थ क्या हुआ? प्रत्यक्ष ही है, कि रोम से आए हुए इन लोगों ने जब सुसमाचार का पालन किया था, तो वापस अपने देश पहुंचकर उस सुसमाचार को उन्होंने अपने देशवासियों को भी सुनाया होगा, और इस प्रकार वहां कलीसिया की स्थापना हुई थी।

2. सुसमाचार का प्रचार सारे यहूदिया में किया जाना था। अब क्योंकि यहूदिया यरुशलेम के आस-पास ही था, तो इसका अर्थ यह हुआ कि वहां के लोगों में प्रचार करना कोई कठिन काम नहीं था। सो आनेवाले कुछ ही दिनों में, सुसमाचार का प्रचार यरुशलेम में हो गया और इसी प्रकार सारे यहूदिया में भी हो गया। फिर हम स्तिफनुस की मृत्यु के सम्बन्ध में पढ़ते हैं, और लिखा है, कि शाऊल उसकी हत्या में सहमत था।

(प्रेरितों 7:60)। फिर लिखा है, कि "उसी दिन यरुशलेम की कलीसिया पर बड़ा उपद्रव होने लगा और प्रेरितों को छोड़ सबके सब यहूदिया और सामरिया देशों में तितर-बितर हो गए।" (प्रेरितों 8:1) फिर, जो तित्तर-बित्तर हुए थे उनके बारे में आगे हम इस प्रकार पढ़ते हैं: "जो तित्तर-बित्तर हुए थे, वे सुसमाचार सुनाते हुए फिरे।" (प्रेरितों 8:4)। इस प्रकार सारे यहूदिया में सुसमाचार का प्रचार हुआ।

3. इसके बाद सुसमाचार को सामरिया के लोगों के पास पहुंचाना था। सो लिखा है, "और फिलिप्पुस सामरिया नगर में जाकर लोगों में मसीह का प्रचार करने लगा। और जो बातें फिलिप्पुस ने कहीं उन्हें लोगों ने सुनकर और जो चिन्ह वह दिखाता था उन्हें देख देखकर, एक चित्त होकर मन लगाया।" (प्रेरितों 8:5-6)। "परन्तु जब उन्होंने फिलिप्पुस की प्रतीति की जो परमेश्वर के राज्य और यीशु के नाम का सुसमाचार सुनाता था तो लोग, क्या पुरुष, क्या स्त्री बपतिस्मा लेने लगे।" (प्रेरितों 8:12)। इसके बाद जब पतरस और यूहन्ना वहां आए, तो आगे लिखा है, "सो वे गवाही देकर और प्रभु का वचन सुनाकर, यरुशलेम को लौट गए, और सामरियों के बहुत गावों में सुसमाचार सुनाते गए।" (प्रेरितों 8:25)। सो प्रभु की योजनानुसार सामरिया के लोगों ने भी सुसमाचार सुन लिया।

4. पर इस सबके बाद सुसमाचार को सारे संसार में भी ले जाना अवश्य था। प्रेरित पौलुस इस बात का प्रमाण यह कहकर देता है, "यदि तुम विश्वास की नेव पर दृढ़ बने रहो, और उस सुसमाचार की आशा को जिसे तुमने सुना है न छोड़ो, जिसका प्रचार आकाश के नीचे की सारी सृष्टि में किया गया; और जिसका मैं पौलुस सेवक बना।" (कुलुस्सियों 1:23)। सो प्रभु की योजनानुसार सारे संसार को सुसमाचार सुनाने का यह काम लगभग तीस वर्षों के भीतर पूर्ण रूप से सम्पन्न हो गया था; अर्थात् जहां तक वे लोग उस समय तक संसार से परिचित थे।

अब, आज प्रभु हम से क्या चाहता है? वह चाहता है कि हम भी

ऐसा ही करें। अर्थात् आज हमारा भी यही कर्त्तव्य है कि हम सुसमाचार को सारे संसार में, और संसार के सारे देशों में, तथा सारे देशों के सारे मनुष्यों के पास ले जाएं। जबकि ऐसा प्रतीत होता है कि यह काम आज हमारे लिये बहुत ही बड़ा है क्योंकि आज संसार में बहुत अधिक लोग हैं। परन्तु आज के उन्नतिशील संसार में जो साधन आज हमें उपलब्ध हैं, अर्थात् यातायात, डाक तथा रेडियो, टी.वी., इत्यादि, उन सबको दृष्टिकोण में रखकर, यह काम आज हमारे लिये और भी आसान होना चाहिए। परन्तु बात यह है कि प्रभु ने हमें यह ज़िम्मेदारी सौंपी है और हमें इसे अवश्य ही पूरा करना है। याद रखें, कि वह हमें कोई ऐसा काम करने को नहीं कहता है जो असम्भव है।

संसार को मसीह के सुसमाचार की आवश्यकता है। यही संसार की आशा है। केवल मसीह का सुसमाचार ही जगत को बदल सकता है, उसकी सहायता कर सकता है, और उसे बचा सकता है। हम में से जिन लोगों के पास यह सुसमाचार है हमें इस बात की ओर ध्यान देना चाहिए कि जगत के सारे लोग इसे सुन लें।

# अन्य सुसमाचारों का प्रचार

जबकि नए नियम में यीशु मसीह के सुसमाचार को ही प्रचार करने के महत्त्व पर बल दिया गया है, तौभी उसमें हमें कुछ अन्य सुसमाचारों के विषय में भी मिलता है। पौलुस एक जगह चेतावनी देकर यूं कहता है, "यदि कोई तुम्हारे पास आकर, किसी दूसरे यीशु को प्रचार करे, जिसका प्रचार हमने नहीं किया या कोई और आत्मा तुम्हें मिले, जो पहिले न मिला था, या और कोई सुसमाचार जिसे तुमने पहिले न माना था, तो तुम्हारा सहना ठीक होता।" (2 कुरिन्थियों 11:4)। आगे वह फिर कहता है, "क्योंकि ऐसे लोग झूठे प्रेरित, और छल से काम करनेवाले, और मसीह के प्रेरितों का रूप धरनेवाले हैं। और यह कुछ अचम्भे की बात नहीं क्योंकि शैतान आप भी ज्योतिर्मय स्वर्गदूत का रूप धारण करता है। सो यदि उसके सेवक भी धर्म के सेवकों का सा रूप धरें, तो कुछ बड़ी बात नहीं परन्तु उनका अन्त उनके कामों के अनुसार होगा।" (2 कुरिन्थियों 11:13-15)।

फिर गलतिया के लोगों को लिखकर पौलुस ने यूं कहा था, "मुझे आश्चर्य होता है, कि जिसने तुम्हें मसीह के अनुग्रह से बुलाया उससे तुम इतनी जल्दी फिरकर और ही प्रकार के सुसमाचार की ओर झुकने लगे। परन्तु वह दूसरा सुसमाचार है ही नहीं: पर बात यह है, कि कितने ऐसे हैं, जो तुम्हें घबरा देते, और मसीह के सुसमाचार को बिगाड़ना चाहते हैं। परन्तु यदि हम या स्वर्ग से कोई दूत भी उस सुसमाचार को छोड़ जो हमने तुम को सुनाया है, कोई और सुसमाचार तुम्हें सुनाए, तो स्रापित हो। जैसा हम पहले यह कह चुके हैं, वैसा ही मैं अब फिर कहता हूं, कि उस सुसमाचार

को छोड़ जिसे तुमने ग्रहण किया है, यदि कोई और सुसमाचार सुनाता है, तो स्रापित हो।" (गलतियों 1:6-9)। अब प्रेरित यहां क्या कह रहा है? आईए, निम्नलिखित बातों को देखें:

1. गलतिया के लोगों ने यीशु मसीह के सत्य सुसमाचार को स्वीकार किया था।

2. पौलुस को बाद में इस बात से बड़ा आश्चर्य हुआ था कि वे इतनी जल्दी उसे छोड़कर किसी दूसरे सुसमाचार की ओर फिर गए थे। किन्तु, वह तुरन्त ही इस बात को स्पष्ट करके कहता है, कि वह दूसरा वास्तव में सुसमाचार है ही नहीं।

3. उनके बीच में कुछ ऐसे लोग भी थे जो मसीह के सुसमाचार में बदलाव या परिवर्तन कर रहे थे, जिसके फलस्वरूप वे उसे व्यर्थ ठहरा रहे थे।

4. फिर, पौलुस स्वयं अपने आप को भी सम्बोधित करता है, जबकि वह यह कहता है, कि चाहे वह स्वयं या कोई और मनुष्य, या चाहे स्वर्ग से कोई दूत भी आकर, उस सुसमाचार को छोड़ जिसे वे पहिले सुन चुके हैं, किसी और प्रकार के सुसमाचार को उन्हें सुनाएं, तो वे परमेश्वर की ओर से स्त्रापित हो। सो इसका अर्थ यह हुआ, कि वास्तविक सुसमाचार का प्रचार पहिले ही किया जा चुका था, और कोई भी अन्य प्रचार जो उस सुसमाचार से सहमत नहीं था वह सच्चा सुसमाचार नहीं हो सकता था। फिर हम यह भी देखते हैं, कि चाहे वह व्यक्ति कोई भी क्यों न हो, चाहे वह पृथ्वी का हो या स्वर्ग का, वह किसी नई बात का प्रचार करके प्रभु की आशीष प्राप्त करने की आशा नहीं रख सकता, परन्तु उसे इसका परिणाम भुगतना होगा।

5. इस सम्बन्ध में चेतावनी पर बल देने के दृष्टिकोण से पौलुस ने अपनी बात को दोबारा दोहराकर कहा था।

अब इन बातों को ध्यान में रखकर हम यह देखते हैं, कि प्रभु की

योजना में किसी भी अन्य सुसमाचार का कोई स्थान नहीं है, और अनेक सुसमाचारों का तो प्रश्न ही नहीं उठता। इसके अतिरिक्त, हम यह भी देखते हैं, कि उस सुसमाचार को छोड़, जिसके विषय में हमें परमेश्वर के वचन में मिलता है, किसी अन्य सुसमाचार को प्रचार करना बड़ा ही भयानक बात है, क्योंकि जो लोग ऐसा करेंगे उनके लिये परमेश्वर की ओर से श्राप ठहराया गया है। क्यों? क्योंकि प्रभु ने किसी भी मनुष्य को कोई और सुसमाचार प्रचार करने का हक्क या अधिकार नहीं दिया है। कुछ और प्रचार करने का अर्थ यह है कि मसीह के वास्तविक सुसमाचार को व्यर्थ या तुच्छ समझा गया है।

परन्तु, फिर भी, हम सब जानते हैं कि आज कई प्रकार के सुसमाचार प्रचार किए जा रहे हैं। अर्थात् कई प्रकार की उद्धार की योजनाएं तथा परस्पर विरोधी शिक्षाएं, इत्यादि, प्रचार की जा रही हैं। किन्तु वास्तविक सुसमाचार क्या है? हम आज किस प्रकार जान सकते हैं कि हमारे पास वास्तव में सच्चा सुसमाचार है? निम्नलिखित बातों पर ध्यान दें:

1. सबसे पहिले सुसमाचार के सम्बन्ध में सच्चाई जानने के लिये बाइबल में से पढ़ना या सुनना आवश्यक है। मसीह के शुभ-संदेश से सम्बन्धित सारी सच्चाई का ज्ञान हमें परमेश्वर की पुस्तक से ही होता है। इसी पुस्तक अर्थात बाइबल के पृष्ठों में आप सुसमाचार से सम्बन्धित विशेष बातों को (1 कुरिन्थियों 15:1-4) तथा सुसमाचार की आज्ञाओं को पढ़ सकते हैं। (मरकुस 16:15-16; प्रेरितों 2:38)। आपके सारे संदेह, उलझने, तथा प्रश्न स्पष्ट हो सकते हैं, यदि आप परमेश्वर को उसके वचन के द्वारा अपने से बातें करने दें।

2. जो शिक्षा मसीह के सुसमाचार के उद्धार की योजना के विरूद्ध है, उसे स्वीकार न करें। मनुष्य को यह अधिकार नहीं दिया गया है कि वह इस विषय पर अपने सोच-विचारों को प्रकट करे। और वास्तव में किसी भी समझदार व्यक्ति को इस प्रकार के विचारों को स्वीकार नहीं

करना चाहिए।

3. साम्प्रदायिक प्रचारकों द्वारा प्रचार किए जा रहे भिन्न-भिन्न सुसमाचार बाइबल का वास्तविक सुसमाचार नहीं हो सकते। यदि आप मसीह के सुसमाचार को मानेंगे तो न तो आप किसी सम्प्रदाय के सदस्य बनेंगे और न ही आप मनुष्यों के बनाए किसी धार्मिक नाम इत्यादि से कहलाएंगे। इस बात को अवश्य ध्यान में रखें। किन्तु मसीह के सुसमाचार को मानने के द्वारा, इसके विपरीत, आपका उद्धार होगा और वह आपको अपनी कलीसिया (मन्डली) में मिलाएगा, और आप केवल एक मसीही बन जाएंगे। (पढ़िए प्रेरितों 2:38, 47; प्रेरितों 11:26)।

4. उन लोगों से चौकस रहें जो "केवल विश्वास के द्वारा" ही उद्धार प्राप्त करने की शिक्षा देते हैं, या यह सिखाते हैं कि मनुष्य बपतिस्मा लिये बिना तथा मसीह की अन्य आज्ञाओं को माने बिना ही उद्धार पा सकता है। ये उन लोगों की प्रमुख शिक्षाएं हैं जो बाइबल के सुसमाचार के अतिरिक्त अन्य सुसमाचारों का प्रचार करते हैं। यह बात चेतावनी के रूप में यहां इसलिये कही जा रही है क्योंकि बाइबल यह सिखाती है कि मनुष्य को उद्धार पाने के लिये न केवल विश्वास लाना ही आवश्यक है परन्तु, बपतिस्मा लेना भी आवश्यक है। (मरकुस 16:16)।

5. इस बात को भी याद रखें, कि संसार में अधिकांश लोग उस चौड़े मार्ग पर चल रहे हैं जो विनाश को पहुंचाता है। (मत्ती 7:13-14)। अक्सर वे लोग जो अनन्य सुसमाचारों का प्रचार करते हैं अपने सुननेवालों पर अपनी बातों का प्रभाव जमाने के लिये उनसे कहते हैं कि अधिकांश लोग उनके विचारों से सहमत हैं। पर यह भी याद रखें, कि अधिकांश लोग अकसर गलत रास्ते पर ही चलते हैं!

6. आजकल जिन नए तथा आधुनिक सुसमाचारों का प्रचार किया जा रहा है वे फूट के प्रतीक हैं। वे फूट फैलाने में सहयोग देते हैं। और जो लोग उनका प्रचार करते हैं वे फूट और विभाजन का प्रचार करते हैं। परन्तु

दूसरी ओर, मसीह यीशु के सुसमाचार के द्वारा एकता तथा शांति आती है। पढ़िए: 1 कुरिन्थियों 1 अध्याय तथा 12 अध्याय। फिर यूहन्ना की पुस्तक के 17 अध्याय में पढ़िए कि किस प्रकार प्रभु ने प्रार्थना की थी कि उसके सारे प्रेरित एक हों, और फिर वे, जो उनकी शिक्षा को सुनकर विश्वास लाएंगे, वे सब भी उसमें एक हों।

7. अन्त में, यह भी स्मरण रखें कि ये सभी भिन्न-भिन्न "सुसमाचार" किसी का भी उद्धार नहीं कर सकते। परन्तु वे जो उनका प्रचार करते हैं और वे जो उन्हें स्वीकार करते हैं, वे सब उनके ही कारण नाश होंगे। याद रखें, केवल मसीह के सत्य सुसमाचार में ही उद्धार करने की शक्ति है। (रोमियों 1:16-17)।

फूट तब उत्पन्न होती है जब गलत तथा अनुचित शिक्षाओं का प्रचार किया जाता है। इसी कारण, प्रेरित पौलुस ने एक जगह इस प्रकार कहा था कि, "अब हे भाईयो, मैं तुम से बिनती करता हूं कि जो लोग उस शिक्षा के विपरीत जो तुमने पाई है, फूट पड़ने और ठोकर खाने के कारण होते हैं, उन्हें ताड़ लिया करो; और उनसे दूर रहो। क्योंकि ऐसे लोग हमारे प्रभु मसीह की नहीं, परन्तु अपने पेट की सेवा करते हैं, और चिकनी चुपड़ी बातों से सीधे-साधे मन के लोगों को बहका देते हैं।" (रोमियों 16:17-18)। इससे हम देखते हैं कि हमें ऐसे प्रचारकों को ताड़कर उनसे दूर रहने की आवश्यकता है जो मसीह के सुसमाचार को बिगाड़कर सिखाते हैं। एक अन्य स्थान पर, प्रेरित यूहन्ना यूं लिखकर कहता है: "जो कोई आगे बढ़ जाता है, और मसीह की शिक्षा में बना नहीं रहता, उसके पास परमेश्वर नहीं: जो कोई उसकी शिक्षा में स्थिर रहता है, उसके पास पिता भी है, और पुत्र भी। यदि कोई तुम्हारे पास आए, और यही शिक्षा न दे, उसे न तो घर में आने दो, और न नमस्कार करो। क्योंकि जो कोई ऐसे जन को नमस्कार करता है, वह उसके बुरे कामों में साझी होता है।" (2 यूहन्ना 9-11)। फिर हम मसीह के इन चेतावनीपूर्ण शब्दों को भी पढ़ते हैं: "मैं

हर एक को जो इस पुस्तक की भविष्यद्वाणी की बातें सुनता है, गवाही देता हूं, कि यदि कोई मनुष्य इन बातों में कुछ बढ़ाए, तो परमेश्वर उन विपत्तियों को जो इस पुस्तक में लिखी है, उस पर बढ़ाएगा। और यदि कोई इस भविष्यद्वाणी की पुस्तक की बातों में से कुछ निकाल डाले, तो परमेश्वर उस जीवन के पेड़ और पवित्र नगर में से जिसकी चर्चा इस पुस्तक में है, उसका भाग निकाल देगा।" (प्रकाशितवाक्य 22:18-19)।

अब यह सही है, कि अनन्य सुसमाचारों का प्रचार करनेवालों में से बहुत से लोग ऐसे भी हैं जो अपनी शिक्षाओं का प्रचार ईमानदारी तथा मन की सीधाई के साथ कर रहे हैं। क्योंकि वे धोखे में रहकर ऐसा कर रहे हैं। परन्तु फिर भी इससे इस बात पर परदा नहीं पड़ जाता कि वे गलत शिक्षाओं का प्रचार कर रहे हैं, और इस बात के लिये उन्हें परमेश्वर को जवाब भी देना पड़ेगा। परन्तु, फिर कुछ ऐसे भी हैं जो ऐसा ईमानदारी तथा मन की सीधाई के साथ नहीं कर रहे हैं। विशेष रूप से यह बात उनके लिये सच है जो केवल पैसे के लिये प्रचार कर रहे हैं। क्योंकि उन्हें आत्माओं की कोई चिन्ता नहीं है, परन्तु उन्हें केवल अपनी जीविका का ही ध्यान है। जब तक प्रचार करने के लिये उन्हें वेतन मिल रहा है, उन्हें इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता कि वे क्या प्रचार कर रहे हैं। किन्तु बात यह है कि इस प्रकार के सभी लोगों से बचकर रहें और उनके धोखे में न आएं।

यूं तो साम्प्रदायिक मन्डलियां आज एकता के विषय में बहुत कुछ कह रही है। किन्तु फिर भी उनमें आपसी मत-भेद और अधिक बढ़ रहा है। परन्तु यदि वे वास्तव में एकता की इच्छा रखते हैं तो उन्हें चाहिए कि वे बाइबल में लिखे सुसमाचर के पास वापस आएं, और केवल उसी को मानें और उसी का प्रचार करें, और तब ही इसका परिणाम एकता होगा।

# सुसमाचार को रोकना

एक जगह इस बात की चर्चा करते हुए कि जो लोग सुसमाचार सुनाते हैं, उनकी जीविका सुसमाचार से ही हो, अर्थात् इस काम के लिये उन्हें सहायता मिले, प्रेरित पौलुस आगे कहता है: "परन्तु हम यह अधिकार काम में नहीं लाए; परन्तु सब कुछ सहते हैं, कि हमारे द्वारा मसीह के सुसमाचार की कुछ रोक न हो।" (1 कुरिन्थियों 9:12)। यद्यपि कि वह सुसमाचार के लिये रूकावट नहीं बना, परन्तु वह जानता था कि उसके या किसी भी अन्य मनुष्य के लिये ऐसा करना सम्भव था। और यही बात आज भी सच है।

स्पष्ट ही है, कि जो लोग गलत शिक्षाओं को फैलाते हैं और उनका प्रचार करते हैं, वे मसीह के सुसमाचार के लिए एक बड़ी रूकावट बनते हैं। यदि ऐसा न होता तो सोचिए कि सुसमाचार का प्रभाव आज कितना बड़ा तथा अधिक होता। किन्तु दूसरी ओर, कदाचित् ऐसे ही, या हो सकता है इस से भी अधिक, स्वयं कालीसिया के सदस्य भी सुसमाचार की रोक कर रहे हैं। सो अब हम इस विषय पर विचार करेंगे कि हम किन कारणों से मसीह के सुसमाचार के लिये रूकावट बन सकते हैं:

1. हम मसीह के सुसमाचार को उस समय रोकते हैं जब हम उसके विषय में दूसरों को नहीं बताते और उसका प्रचार नहीं करते। सुसमाचार सब लोगों के लिये है। इसे हमें सब लोगों में बांटना है। और यह हमारा कर्तव्य है। प्रभु ने आज्ञा देकर कहा था कि हम इसे सब मनुष्यों के पास ले जाएं। (मरकुस 16:15-16)। अब यह काम हम दो प्रकार से कर

सकते हैं। हम इसे अपने मुंह से प्रचार कर सकते हैं या इसे अपने जीवनों से अन्य लोगों को सिखा सकते हैं। हम में से हर एक इन में से कुछ न कुछ कर सकता है, परन्तु अधिकतर लोग कुछ भी नहीं करते। सो इसका अर्थ यह हुआ कि जब हम लोगों के पास सुसमाचार नहीं ले जाते हैं तो हम उसे फैलने से रोकते है। यह एक पाप है।

2. जब हम प्रभु की मंडली में एकत्रित नहीं होते तो हम उसके सुसमाचार पर रोक लगाते हैं। ऐसा किस प्रकार हो सकता है? यह बात बिल्कुल साधारण है। जब हम प्रभु की मन्डली में उसकी उपासना के लिये नहीं आते तो हम उसकी उपासना तो कर ही नहीं पाते परन्तु इसी के साथ हम उस आत्मिक भोजन को भी प्राप्त नहीं कर पाते जो प्रभु के लिये जीवन व्यतीत करने को हमें आवश्यक है। परन्तु इसके अतिरिक्त, हम अन्य लोगों के सम्मुख उचित आदर्श भी नहीं रख पाते और उन लोगों के साथ मिलने के अवसर से लाभ नहीं उठा पाते जिन्हें वचन तथा आदर्श के द्वारा सुसमाचार सीखने की आवश्यकता है। इसलिये हम देखते हैं, कि बाइबल में इब्रानियों की पत्री का लेखक प्रभु के लोगों को उपदेश देकर एक जगह उनसे यूं कहता है, "और अपनी आशा के अंगीकार को दृढ़ता से थामे रहें, क्योंकि जिसने प्रतिज्ञा की है वह सच्चा है। और प्रेम और भले कामों में उस्काने के लिये एक दूसरे की चिन्ता किया करें। और एक दूसरे के साथ इक्ट्ठा होना न छोड़ें, जैसे कि कितनों की रीति है, पर एक दूसरे को समझाते रहें, और ज्यों-ज्यों उस दिन को निकट आते देखो, त्यों-त्यों और भी अधिक यह किया करो। क्योंकि सच्चाई की पहिचान प्राप्त करने के बाद यदि हम जान-बूझकर पाप करते रहें, तो पाप के लिये फिर कोई बलिदान बाकी नहीं है। हाँ, दन्ड का एक भयानक बाट जोहना और आग का ज्वलन बाकी है जो विरोधियों को भस्म कर देगा।" (इब्रानियों 10:23-27)।

3. जब हम एक अच्छे मसीही की तरह आगे नहीं बढ़ते और उन्नति

नहीं करते तो हम सुसमाचार पर रोक लगाते हैं। क्योंकि यदि हम स्वयं ही आत्मिक रूप से निर्बल हैं तो हमें आवश्यकता है कि कोई और हमें सिखाए, विपरीत इसके कि हम अन्य लोगों को सिखाने के योग्य हों। इसी बात के ऊपर हमारा ध्यान दिलाकर इब्रानियों की पत्री का लेखक फिर कहता है कि, "समय के विचार से तो तुम्हें गुरु हो जाना चाहिए था, तौभी क्या यह आवश्यक है कि कोई तुम्हें परमेश्वर के वचन की आदि शिक्षा फिर से सिखाए? और ऐसे हो गए हो, कि तुम्हें अन्न के बदले अब तक दूध ही चाहिए। क्योंकि दूध पीनेवाले बच्चे को तो धर्म के वचन की पहिचान नहीं होती, क्योंकि वह बालक है। पर अन्न सयानों के लिए है, जिनकी ज्ञानेन्द्रियां अभ्यास करते-करते, भले-बुरे में भेद करने में निपुण हो गई हैं।" (इब्रानियों 5:12-14)।

4. हम अपने अनुचित कामों के द्वारा भी प्रभु के कार्य में बाधक बनते हैं। इस प्रकार हम उसके नाम को गन्दा तथा कलंकित करते हैं। जगत के लोग हमारे ऊपर उंगली उठाकर ठट्टा करके कहते हैं कि मसीहीयत यदि यही है तो हमें इसकी कोई आवश्यकता नहीं है। हम अच्छे तथा भले लोगों के लिये ठोकर का कारण बनते हैं। हम अन्य लोगों के लिये बुरे आदर्श स्थापित करते हैं। इन सब बातों से हानि होती है। प्रभु चाहता है कि हम न केवल मसीही नाम को ही अपने ऊपर रखें, परन्तु वास्तव में मसीही जीवन भी बिताएं। वह चाहता है कि हम सब कुछ उसके नाम से तथा उसकी महिमा के लिये करें। प्रेरित पौलुस ने कहा था, "और वचन से या काम से जो कुछ भी करो सब प्रभु यीशु के नाम से करो, और उसके द्वारा परमेश्वर पिता का धन्यवाद करो।" (कुलुस्सियों 3:17)। इसी प्रकार प्रेरित पतरस ने कहा था, "फिर यदि मसीह के नाम के लिये तुम्हारी निन्दा की जाती है, तो धन्य हो, क्योंकि महिमा का आत्मा जो परमेश्वर का आत्मा है, तुम पर छाया करता है। तुम में से कोई व्यक्ति हत्यारा या चोर, या कुकर्मी होने, या पराए काम में हाथ डालने के कारण

दुख न पाए। पर यदि मसीही होने के कारण दुख पाए, तो लज्जित न हो, पर इस बात के लिये परमेश्वर की महिमा करे। क्योंकि वह समय आ पहुंचा है, कि पहिले परमेश्वर के लोगों का न्याय किया जाए, और जब कि न्याय का आरम्भ हम ही से होगा तो उनका क्या अन्त होगा जो परमेश्वर के सुसमाचार को नहीं मानते? और यदि धर्मी व्यक्ति ही कठिनता से उद्धार पाएगा, तो भक्तिहीन और पापी का क्या ठिकाना? इसलिये जो परमेश्वर की इच्छा के अनुसार दुख उठाते हैं, वे भलाई करते हुए, अपने-अपने प्राण को विश्वास योग्य सृजनहार के हाथ में सौंप दें।" (1 पतरस 4:14-19)।

5. हम अपने कर्त्तव्य तथा ज़िम्मेदारी की ओर ध्यान न देकर भी प्रभु के कार्य की उन्नति को रोक सकते हैं। कलीसिया के ऐसे बहुत से सदस्य हैं जिनमें कोई बुराई या दुष्टता नहीं है। वे जान-बूझकर ऐसा कोई भी काम नहीं करते जो बुरा या अनुचित है। अन्य लोग उन्हें देखकर उनकी प्रशंसा करते है। परन्तु उनमें घटी इस बात की है कि वे उन कामों की ओर कोई ध्यान न देकर, जिन्हें करना आवश्यक है, यों ही चलते रहते हैं। परन्तु ध्यान न देना, उचित कदम न उठाना, तथा असावधानी, इत्यादि, हानिकारक सिद्ध हो सकते हैं। हम जानते हैं कि इस प्रकार की बात हमारे प्रतिदिन के जीवन में सच है। इसी प्रकार यह बात आत्मिक दृष्टिकोण से भी सही है। इसलिये, याकूब ने कहा था, "परन्तु वचन पर चलनेवाले बनो, और केवल सुननेवाले ही नहीं जो अपने आप को धोखा देते हैं।" (याकूब 1:22)। इसी के साथ, केवल विश्वास के विषय में, या उन लोगों के सम्बन्ध में जिनके विश्वास के साथ कोई कार्य नहीं होता, याकूब का दूसरा अध्याय तथा याकूब 4:17 को भी पढ़िए। ऐसे ही हम पढ़ते हैं, "इस कारण चाहिए, कि हम उन बातों पर जो हमने सुनी हैं, और भी मन लगाएं, ऐसा न हो कि बहककर उनसे दूर चले जाएं। क्योंकि जो वचन स्वर्गदूतों के द्वारा कहा गया था जब वह स्थिर रहा और हर एक अपराध

और आज्ञा न मानने का ठीक-ठीक बदला मिला। तो हम लोग ऐसे बड़े उद्धार से निश्चिन्त रहकर क्योंकर बच सकते हैं? जिसकी चर्चा पहिले-पहिल प्रभु के द्वारा हुई, और सुननेवालों के द्वारा हमें निश्चय हुआ।" (इब्रानियों 2:1-3)।

6. फिर, अपने दान न देने के कारण भी हम सुसमाचार पर रोक लगा सकते हैं। कलीसिया दरिद्रों की सहायता करने तथा सुसमाचार प्रचार करने के अपने कार्य को पूरा करने के लिये सदस्यों के दानों पर ही निर्भर रहती है। परन्तु मान लीजिये, हम नहीं देते। इसका अर्थ यह नहीं होगा कि कलीसिया का काम बिल्कुल ठप्प हो जाएगा, क्योंकि अन्य सदस्य कदाचित देते रहेंगे। किन्तु, ऐसी परिस्थिति में कलीसिया अपने प्रयत्नों में सीमित अवश्य हो जाएगी। इसीलिये एक जगह बाइबल कहती है, कि जब हम नहीं देते तो हम परमेश्वर को लूटते हैं या उसे सीमित करते हैं। उसका काम उतना ही अधिक हो सकता है जितना अधिक हम उसके काम के लिये देंगे। इसलिये पौलुस ने आदेश देकर कहा था, "सप्ताह के पहिले दिन तुम में से हर एक अपनी आमदनी के अनुसार कुछ अपने पास रख छोड़ा करे, कि मेरे आने पर चंदा न करना पड़े।" (1 कुरिन्थियों 16:2)। याद रखें, कि जिस प्रकार हमें देना चाहिए यदि हम वैसे ही नहीं देते तो इसका परिणाम यह हो सकता है कि कोई जन सुसमाचार को सुने बिना ही रह जाए, या हो सकता है, जिसे सहायता की आवश्यकता हो वह बिना सहायता के रह जाए। सो यह एक बड़ा ही गम्भीर विषय है, विशेषकर जब हम यह अनुभव करते हैं कि इसका सम्बन्ध आत्माओं से, और अनेक लोगों की भलाई से है तथा स्वयं हमारी अपनी आत्माओं से भी है।

सो इन सभी बातों से हम यह देख सकते हैं, कि जबकि सम्भव है कि जगत के सारे लोगों तक मसीह का सुसमाचार पहुंचाने में असफल होने के लिये कदाचित् हम अन्य धार्मिक संगठनों को और विशेषकर साम्प्रदायिक मन्डलियों को दोषी ठहराने का प्रयत्न करें, किन्तु वास्तव में

इस विषय में अधिकतर दोष स्वयं हमारा ही हो सकता है। इसमें कोई संदेह नहीं, कि साम्प्रदायिक धार्मिक संगठन, इत्यादि, नए नियम की सच्ची मसीहीयत के फैलने में बाधक सिद्ध हो सकते हैं, परन्तु हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि जब तक हम स्वयं सही हैं, और प्रभु की इच्छा अनुसार चल रहे हैं, तो कोई भी बाहरी ताकत हमें प्रभु के काम को पूरा करने से, जिसमें सारे जगत के लोगों तक सुसमाचार पहुंचाने का काम भी सम्मिलित है, नहीं रोक सकती। परन्तु अकसर जो वस्तुएं हमें प्रभु की इच्छा पूर्ण करने से रोकती हैं वे स्वयं हमारी अपनी ही कमज़ोरियाँ, हमारी असफलताएं, हमारे भीतर विश्वास की कमी, हमारे पाप, और ऐसी ही अनेक अन्य वस्तुएं हैं जो कदाचित हमारे मनों तथा जीवनों में विद्यमान हैं।

सो प्रभु हम सब की सहायता करे कि उसकी सच्चाई पर दृढ़ बने रहने, और अपने जीवनों में उसे प्रतिदिन व्यवहार में लाने, तथा अंधकार में खोए हुए नाशमान् संसार तक उसे पहुंचाने के लिए हमारे पास एक दृढ़ विश्वास, प्रेम, उत्साह, हौंसला तथा निश्चय हो। किन्तु चाहे जो भी हो, यह बात निश्चित है कि या तो हम सुसमाचार के लिये रूकावट बनेंगे या फिर हम उसकी उन्नति का कारण बनेंगे। प्रभु चाहता है कि, हम उसके सुसमाचार को मानें और उसे अन्य लोगों तक भी पहुंचाएं।

क्योंकि केवल प्रभु यीशु मसीह का सुसमाचार ही सारे जगत के सब लोगों के लिये एक मात्र आशा है जिसे मानकर प्रत्येक मनुष्य परमेश्वर के स्वर्ग में प्रवेश कर सकता है।

## अधिक जानकारी के लिये लिखें :

**मसीह की कलीसिया**
पोस्ट बॉक्स 3815
नई दिल्ली–110049

**Church of Christ**
Post Box 3815
New Delhi-110049